रजिस्ट्री सं. डी. एल.-33001/99 REGISTERED NO. DL-33001/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 16] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 17, 1999 (चैत्र 27, 1921)
No. 16] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 17, 1999 (CHAITRA 27, 1921)

(इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके)
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालयों द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं .	377
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं . . .	263
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	5
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं .	387
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . .	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ . .	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट . . .	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)।	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii) भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं . .	*
भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश . . .	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	353
भाग III—खण्ड 2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	393
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं .	—
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं।	1225
भाग IV— गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस . . .	431
भाग V— अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला सम्पूरक	

*आंकड़े प्राप्त नहीं हुए

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	377
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	263
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	5
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	387
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Languages of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 2—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 of Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	353
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	393
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	1225
PART IV—Advertisements and Notices issued by private Individuals and private Bodies	431
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc., both in English and Hindi	*

*Folios not received

भाग I—खण्ड 1

[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सांविधिक नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 31 मार्च 1999

सं० 59–प्रेज/99—राष्ट्रपति निम्नलिखित को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :–

एस एस 36327 लेफ्टिनेंट राजेश पट्टू,
ई–486 मयूर विहार, फेस–II
नई दिल्ली–91

लेफ्टिनेंट राजेश पट्टू और एक अन्य अधिकारी सपरिवार 13 जून, 1998 को उस दिन उपहार सिनेमा में फंसे अनेक लोगों में शामिल थे जिस दिन मेटिनी शो के दौरान सिनेमा मे भयंकर आग लग गई थी ।

2. दहशतमंद लोगों, धुएं तथा अंधेरे के बीच फंसे लेफ्टिनेंट राजेश पट्टू ने बड़ी कुशलता एवं तत्परता से कार्य किया । एकान्त स्थान पर बने एक महिला शौचालय में, जहां अपेक्षाकृत कम प्रदूषण था, वे लोगों की निरन्तर बढ़ रही संख्या को धीरज बंधाने में सफल हुए ।

3. शौचालय की अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा को छोड़ने का साहस एवं दूरदर्शिता से काम लेते हुए लेफ्टिनेंट पट्टू बाहर निकल आए तथा अपने लिए बचाव का मार्ग निकाला । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे चौथी मंजिल पर खिड़की से छः फुट की दूरी पर कूदकर एक ड्रेन पाइप पर चढ़ गए तथा फिसलते हुए नीचे की ओर आए ।

4. वे हाइड्रोलिक लिफ्ट की मदद से चौथी मंजिल पर चढ़ गए तथा जोर लगाकर महिला शौचालय को खोल दिया और 15–20 व्यक्तियों/शवों को वहां से बाहर खींचकर उन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता के लिए भेज दिया । इसी प्रकार, उन्होंने दूसरी एवं तीसरी मंजिलों पर भी बचाव कार्य किया ।

5. बड़ी हिम्मत तथा कुशलता से समझाते हुए वे लोगों को दूसरी, तीसरी एवं चौथी मंजिलों से बचाने में कामयाब हुए, उनकी चतुरता एवं नेतृत्व कौशल ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया और इस प्रकार वे एक बड़ा बचाव अभियान चलाने में सफल हुए ।

6. लेफ्टिनेंट राजेश पट्टू ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए भयंकर आग से बचाव अभियान में अनेक लोगों की जान बचाने में अदम्य साहस, तत्परता एवं सूझबूझ का परिचय दिया ।

बशर मित्रा
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं० 60–प्रेज/99—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :–

1. श्री नागराज महादेवप्पा,
शंकन्नवर,
सुपुत्र महादेवप्पा शंकन्नवर,
हुगर गली,
शोवा ताल्की व्यादगी के निकट,
हवेरी जिला,
कर्नाटक ।

27–11–1997 को हलेगरी इतागी सड़क पर हरेहल्ला क्षेत्र में भारी वर्षा के कारण पानी एक पुलिया के ऊपर से बह रहा था । बस चालक की लापरवाही के कारण एक विवाह समारोह से लौट रही के० एम० आर० टी०सी० की दो बसों में से एक पानी के भंवर में फंस गई । तेज बाढ़ बस को बहाकर दूर ले गई जिसके परिणामस्वरूप 50 में से 34 व्यक्तियों (13 पुरुष, 14 महिलाओं एवं 7 बच्चों) की मृत्यु हो गई जबकि शेष 16 व्यक्ति अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहे थे ।

2. उसी समय एक टैम्पू में इतागी से हलेगरी आ रहे श्री नागराज ने इस भयावह दुर्घटना को देख लिया । वे तुरन्त टैम्पू से उतर आए तथा पास खड़ी एक लारी से एक रस्सी निकाल लाए । उन्होंने रस्सी को एक पत्थर से बांध दिया तथा उसका दूसरा सिरा अपनी कमर से बांध लिया । अपनी जान की परवाह किए बिना वे पानी में कूद गए । वे तैरकर बस के नजदीक पहुंचे तथा रस्सी को बस के पहिए से बांध दिया ताकि बस और आगे न खिसक सके । वे बस में घुस गए और बस में फंसे व्यक्तियों को खिड़की के रास्ते बाहर निकाला और उन्हें बस की छत पर चढ़ा दिया । इस प्रकार उन्होंने 16 व्यक्तियों (7 महिला, 5 पुरुष और 4 बच्चों) की जान बचाई ।

3. श्री नागराज महादेवप्पा शंकन्नवर ने अपनी जान को जोखिम में डालकर 16 व्यक्तियों की जान बचाने में साहस, तत्परता एवं सूझबूझ का परिचय दिया ।

2. श्री बी० जी० फानिया उर्फ श्री ललबिनिया
बुकपुई, मिजोरम ।

28-8-1998 का जब श्री जोमुआना, श्री ललबिनिया और तीन अन्य व्यक्ति अपने काम पर जाने के लिए मिनीपुइलुइ नदी को पार करने वाले ही थे कि तभी एक जंगली रीछ उनकी ओर लपका तथा उसने श्री जोमुआना पर हमला कर दिया । श्री ललबिनिया तुरन्त अपने पैरों पर उछल गए और अपना चाकू निकालकर रीछ की रीढ़ की हड्डी पर वार किया । तत्पश्चात् रीछ ने श्री ललबिनिया पर हमला किया । जब रीछ अपने बच्चे को चाट रहा था तभी श्री ललबिनिया ने अपनी दायीं टांग से रीछ के सिर पर चोट की। रीछ ने श्री ललबिनिया को छोड़ दिया तथा पुनः श्री जोमुआना पर हमला किया जो कि डर गए और दहशत के मारे बेहोश होकर गिर पड़े । मौके का लाभ उठाकर रीछ ने उन पर हमला किया तथा अपनी पलकों को चुभाना शुरू किया और इस प्रक्रिया में श्री जोमुआना का जबड़ा तोड़ दिया ।

2. श्री ललबिनिया ने रीछ द्वारा श्री जोमुआना पर किये गए आक्रमण के घातक प्रभाव को महसूस करते हुए बिना समय गंवाए रीछ पर हमला बोल दिया और रीछ की बांई आंख पर चाकू से वार करना शुरू किया । जानलेवा रीछ अपने पर हो रहे इस वार को सहन नहीं कर सका और श्री जोमुआना को वहीं छोड़ अपनी सुरक्षा के लिए भाग खड़ा हुआ ।

3. श्री ललबिनिया ने अपनी जान को गंभीर जोखिम में डालकर एक जंगली रीछ से एक व्यक्ति की जान बचाने में साहस, तत्परता तथा सूझबूझ का परिचय दिया ।

3. श्री रवीन्द्र बिसवाल, (मरणोपरान्त)
अरतल डाकखाना-तिरतोल,
जिला जगत सिंह पुर,
उड़ीसा ।

19-8-97 को लगातार वर्षा की वजह से कालाहांडी जिले के जूनागढ़ के पास हाती नदी का जल स्तर भवानी-पटना-जयपुर स्टेट राजमार्ग के पुल पर आठ फुट तक बढ़ गया । 21-8-97 की सुबह जब बाढ़ का पानी कुछ हद तक कम हुआ, कुछ वाहन और व्यक्ति पुल से गुजरे । धर्मगढ़ क्षेत्र के पांच व्यक्तियों ने भी पुल पार करने की कोशिश की । पुल पार करते समय, वे नदी के बहाव के साथ चले किन्तु पुल के मध्य भाग में वे उच्च स्तर तक पहुंचने में कामयाब हुए । पुल का बाकी का हिस्सा पानी में डूबा हुआ था । उन्होंने पानी का स्तर और कम होने का इंतजार किया । लेकिन उसी दिन करीब 3.30 बजे (अपराह्न) बाढ़ का पानी बढ़ा और ये पांचों व्यक्ति असहाय हो गए । स्थल पर अग्नि शमन कार्मिकों की मौजूदगी होते हुए भी, ये कार्मिक आवश्यक उपस्करों की उपलब्धता की वजह से बचाव कार्य करने में असमर्थ रहे । यह देखकर, श्री रवीन्द्र बिसवाल ने जूनागढ़ के चार अन्य व्यक्तियों के साथ नदी में छलांग लगा दी ताकि पांचों व्यक्तियों को डूबने से बचाया जा सके । फिर भी, वह केवल तीन व्यक्तियों को बचा पाए । अन्य दो व्यक्तियों को बचाने के प्रयत्न में वह खुद नदी में डूब गये और उनका शव 23-8-97 को मिला । बचे हुए दोनों व्यक्तियों को प्रशासनिक कार्मिकों ने एक नाव की सहायता से बचाया ।

2. श्री रवीन्द्र बिसवाल ने तीन व्यक्तियों की जान बचाने में अदम्य साहस और सूझबूझ का परिचय दिया और दो अन्य व्यक्तियों को बचाने की प्रक्रिया में सर्वोच्च बलिदान दिया ।

4. हवलदार रतन सिंह (सेवानिवृत्त)
बहरियान-दी-घर,
मैंजी लंगवल्टी,
तहसील एवं जिला—हमीरपुर,
हिमाचल प्रदेश ।

29-3-97 को, श्रीमती बीना देवी, तहसील एवं जिला हमीरपुर, अपनी ससुराल जा रही थीं । रास्ते में एक तेंदुए ने उन पर आक्रमण कर दिया और वह चिल्लाने लगी । उसकी चीख-पुकार सुनकर श्री रतन सिंह घटनास्थल पर पहुंचे और तेंदुए के आक्रमण से उस महिला की जान बचाई । इस पर तेंदुए ने श्री रतन सिंह पर हमला कर दिया और इस प्रक्रिया में रतन सिंह ने अपना दाहिना बाजू खो दिया ।

2. श्री रतन सिंह ने अपने जीवन को खतरे में डालकर तेंदुए के आक्रमण से एक महिला के प्राण बचाए ।

5. श्री मनोज कुमार सिंह, (मरणोपरान्त)
उड़ई गांव डाकघर दूबे छपरा,
जिला बलिया,
उत्तर प्रदेश ।

14-6-97 को करीब 8.00 बजे (प्रातः) श्री मनोज कुमार सिंह अपने दोस्तों के साथ अपने गांव से एक कि०मी० की दूरी पर गंगा नदी में स्नान के लिए गए । अचानक तीन बच्चे जो नदी में स्नान कर रहे थे, डूबने लगे । श्री मनोज कुमार सिंह ने उन बच्चों की चीख-पुकार सुनी और उन्हें डूबते हुए देखा । जबकि उन बच्चों को बचाने के लिए कोई आगे नहीं आया तो श्री मनोज कुमार सिंह अपनी जान के जोखिम की परवाह न करते हुए नदी में कूद पड़े । काफी प्रयत्नों के बाद, श्री मनोज कुमार सिंह बच्चों को नदी किनारे लाने में सफल हो गए । किन्तु उस प्रक्रिया में वे डूब गए और अपनी जान गंवा बैठे ।

2. श्री मनोज कुमार सिंह ने अपने अदम्य साहस और अपनी तत्परता से तीन बच्चों की जान डूबने से बचाई और इस प्रक्रिया में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

6. 22350 (एन० ई० डी०) फ्लाइट लेफ्टीनेण्ट,
शमशेर सिंह दलाल,
गांव एवं डाकघर—चारा,
जिला रोहतक, हरियाणा ।

22-7-97 को फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट, शमशेर सिंह दलाल झंग (90 रोड कंस्ट्रक्शन कम्पनी) से एक गम्भीर मरीज को तेंगा (715 मेडिकल स्टेजिंग सैक्शन) अरूणाचल प्रदेश में ले जा रहे थे । तेंगा जाते हुए रास्ते में, माइल स्टोन 169 के पास बालीपुरा-टवांग रोड पर फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट दलाल को 15-20 व्यक्तियों की उत्तेजित भीड़ का सामना करना पड़ा । पूछताछ से पता चला कि 10 मिनट पहले एक यात्री बस खड्ड में नीचे गिर गई है । यह खड्ड करीब 200 फुट गहरी खड़ी ढाल वाली थी जो तेजी से बहती हुई नदी की ओर जा रही थी ।

2. स्थिति की नजाकत को देखते हुए फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट दलाल ने अपने आप ही बिना समय गवाए किसी संगठित सहायता की परवाह किए बिना बचाव कार्य शुरू करने का निर्णय किया । अपने जीवन को जोखिम में डालकर घटना स्थल पर पहुंचने के लिए वह घनी झाड़ियों के बीच होते हुए खड़ी चढ़ाई की तरफ से बड़ी कठिनाई पूर्वक नीचे आने लगा । बस बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी । खतरनाक स्थिति में गिरी पड़ी थी तथा उसका पिछला हिस्सा नदी में डूआ हुआ था । उस मनहूस बस के कई यात्री संघात से बाहर गिर गए थे और कुछ उसके अन्दर फंसे हुए थे । यह बड़ा ही वीभत्स दृष्य था जहां लोग चीत्कार कर रहे थे । फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट ने अकेले ही यात्रियों की हालत देखने का कार्य शुरू कर दिया था । पांच व्यक्ति मौके पर ही दम तोड़ चुके थे और बाकी करीब 25 व्यक्ति बुरी तरह घायल थे ।

3. फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट दलाल ने एक कार्रवाई योजना बनाई । उसने ढाल से रास्ता बनाया और वहां एकत्र लोगों को अपनी सहायता करने के लिए प्रेरित किया ताकि घायलों को वहां से निकाला जा सके । एक ग्रामीण को प्राइमरी हेल्थ सेण्टर, द्रियांग जो सबसे नजदीक अस्पताल था, में यह सूचना देने के लिए भेजा गया कि वे किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहें । उन्होंने अपने पास एम्बूलेंस में उपलब्ध प्राथमिक चिकित्सा किट अन्य ग्रामीणों की सहायता से घटनास्थल तक पहुंचाया । पहले उसने बच्चों और बुरी तरह घायल व्यक्तियों, बेहोश व्यक्तियों को हटाया ताकि उन्हें और चोट न पहुंचे । क्रासबार का इस्तेमाल करते हुए बस को ऊपर उठाया गया ताकि बस के नीचे दबे हुए व्यक्तियों को निकाला जा सके । उसने सिर पर चोट की वजह से बेहोश पड़े यात्रियों, जिनकी नाक व मुंह से खून निकल रहा था, को सीधा किया ताकि वे ठीक प्रकार से सांस ले सके । दो यात्रियों को फिलेयल चेस्ट के साथ मल्टीपल रिब फ्रैक्चर हुआ था और कम सांस लेने के कारण वे नीले पड़ गए थे । फ्लाइट लेफ्टिनेण्ट एम० दलाल ने पलेलसेगमेण्ट बांधा और मुंह से सांस दी । कुछ समयोपरान्त उनकी हालत सुधर गई । उन्होंने उन घावों को जिनसे तेजी से खून बह रहा था, साफ किया और उन पर पट्टी बांधी । उसने कम्प्रेशन बेण्डेज बांधा ताकि घावों से और खून न बहे । ज्यादा खून बहने से उत्पन्न खतरा समाप्त हो गया क्योंकि शिराओं और सिर से खून बहना बन्द हो गया था । दुर्घटनाग्रस्त लोगों को अस्पताल ले जाते हुए उसने उप स्थान पर उपलब्ध लकड़ी की छड़ियों से उन अंगों को कसर बांधा जिनकी हड्डियां टूटी हुई थी । इस प्रकार अपनी निपुणता से उन्होंने कुछ मूल्यवान जीवन बचा लिए (लगभग 25) जो देरी होने या ठीक से न संभाले जाने के कारण खत्म हो गए होते । दुर्घटनाग्रस्त लोगों को रस्सी के सहारे और स्थानीय लोगों की एक पंक्ति बनाकर सड़क पर लगाया गया । तत्पश्चात वे एक सिविल ट्रक और अपने एक टन वाहन से दुर्घटना-ग्रस्त लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र द्रियांग ले गए । प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में उन्होंने अपेक्षित जीवन रक्षक इलाज की व्यवस्था करने में वहां के मेडिकल स्टाफ की लगातार सहायता की । जब एक बार स्थिति नियंत्रण में आ गई तो फ्लाइट लेफ्टिनेंट एस० एस० दलाल अपने एक रोगी को लेने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से चल दिए जिसे उन्होंने मुन्ना शिविर में छोड़ा और उसे तेंगा स्थित 715 एम० एस० एस० भेजा ।

4. फ्लाइट लेफ्टिनेंट एस० एस० दलाल ने न केवल अत्यधिक गंभीर स्थिति में लगभग 25 लोगों को बचाने में अपनी चिकित्सीय निपुणता का प्रयोग किया वरन उन्होंने खुद पहले की और असा-धारण साहस दिखाया क्योंकि उन्होंने अत्यधिक कठिन स्थितियों में कई घंटे काम किया और अपनी जान की परवाह किए बिना घायल व्यक्तियों का जीवन बचाया ।

7. लांस नायक कायम बहादुर राय (मरणोपरांत)
ग्राम घूम सुखिया रोड,
डाकखाना घूम, जिला दार्जिलिंग,
पश्चिम बंगाल ।

30 मार्च, 1996 को 3/11 गोरखा राईफल्स के लांस नायक कायम बहादुर राय अपनी पत्नी और दो छोटे बच्चों के साथ महानन्दा एक्सप्रेस से यात्रा कर रहे थे । जब रेलगाड़ी पटना से लगभग 45 कि० मी० की दूरी पर पहुंची तो आग्नेयास्त्रों से लैस चार डकैत डिब्बे में घुसे और उन्होंने यात्रियों को लूटना शुरू कर दिया । उनकी परवाह न करने वाला एक यात्री नीचे गिरा दिया गया और एक डकैत ने उसे मारने के लिए पिस्तौल उठा ली । यह देखकर लांस नायक कायम बहादुर राय उसके साथ भिड़ गये । इसी बीच दूसरे डाकुओं ने उन पर वार कर दिया । लांस नायक कायम बहादुर राय बहादुरी से उनसे अकेले ही लड़े और उनकी छाती में बहुत नजदीक से एक गोली लगी जिससे वह घायल हो गया । गंभीर चोटों के बावजूद वे अनवरत डाकुओं से बहादुरी से लड़े और अन्ततः डाकुओं को भागना पड़ा ।

2. यद्यपि वे ड्यूटी पर नहीं थे परन्तु निहत्थे और अकेले ही अपने इस कार्य से उन्होंने भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं को बनाए रखते हुए खुद से ज्यादा अपने साथी यात्रियों की सुरक्षा की परवाह की ।

3. स्वर्गीय लांस नायक कायम बहादुर राय ने अकेले ही अपने साथी यात्रियों के जीवन एवं संपत्ति को बचाने में अदम्य साहस और तत्परता दिखायी तथा इस प्रक्रिया में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

8. ग्रेनेडियर नारायण सिंह, (मरणोपरांत)
ग्राम एवं डाक अपर बेहलि,
तहसील सुन्दर नगर, जिला मंडी,
हिमाचल प्रदेश ।

ग्रेनेडियर नारायण सिंह 14 सितम्बर से 5 अक्तूबर, 1997 तक आकस्मिक अवकाश लेकर गृह नगर गए हुए थे ।

2. 4 अक्तूबर, 1997 को अवकाश व्यतीत करके लौटते वक्त वे सुन्दर नगर की ओर जाने वाली बग्गी सुन्दर नगर बी० बी० एम० बी० नहर के किनारे वाले रास्ते से बस पकड़ने के लिए जा रहे थे । धानोतू गांव के पास उन्होंने दो लड़कियों–मीना (22) और इश्वरो (20) को देखा जो एक तेज गति से आ रही बस से बचने के लिए सड़क से दूर हो गई थी और बी० बी० एम० बी० नहर के तेज धार से बहते पानी में गिरकर डूबने लगी थी । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की जरा भी परवाह किए बिना ग्रेनेडियर नारायण सिंह उन डूबती हुई दोनों लड़कियों को बचाने के लिए तेजी से बहते, बर्फ की तरह ठंडे बी० बी०एम०बी० नहर के तेज बहते पानी में कूद पड़े । तेज रफ्तार वाली और भंवरदार धारों से लड़ते हुए ग्रेनेडियर नारायण सिंह ने अकेले ही गहरे पानी से मीना को बचाया और उसे किनारे ले आए । मीना को बचाने में पूरी तरह थक जाने के बावजूद ग्रेनेडियर नारायण सिंह इश्वरो को बचाने के लिए पुनः भंवरदार पानी में गए जबकि इश्वरो दिखाई ही नहीं दे रही थी । भारी प्रयत्नों और मानवोचित क्षमता से अधिक प्रयास करने के बाद ग्रेनेडियर नारायण सिंह इश्वरो को भंवरदार पानी की गहराई से बाहर ले आए । इस प्रक्रिया में ग्रेनेडियर नारायण सिंह, जो अकेले ही मानवोचित क्षमता से अधिक बहादुरी का प्रयास करने के कारण गहरी ऐंठन से पूरी तरह थक चुके थे, बी० बी०एम० बी० नहर के प्रचण्ड वेग वाले पानी में बह गए । ग्रेनेडियर नारायण सिंह ने दो लड़कियों की जान बचाने के लिए अपनी जान देकर सर्वोच्च बलिदान दिया ।

3. ग्रेनेडियर नारायण सिंह ने दो लड़कियों को डूबने से बचाने में बहादुरी, साहस का प्रदर्शन किया तथा अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

9. कु० करुणा दूबे, (मरणोपरांत)
सुपुत्री श्री श्याम बिहारी दूबे,
गांव खेजरा बाग,
डाकघर बम्होरी बिके,
जिला सागर ।

5–2–1998 को सायं लगभग 8 30 बजे एक ट्रेक्टर ट्राली तथा डम्पर सिरोजा पुल से टकरा गए । परिणामस्वरूप, मास्टर सुदेश सौंधे और कुमारी करुणा दूबे समेत अनेक बच्चों को ले जा रही ट्राली कुछ दूरी पर जाकर एक नाले में गिर गई । यद्यपि मास्टर सुदेश सौंधे के पैर और कान में चोट लग गई थी परन्तु वह अन्य बच्चों को बचाने के लिए दौड़ा । कुछ प्रयासों से उसने कमल, कल्पना और निलिमा को नाले से बाहर निकाल लिया । कु० करुणा दूबे नाले के पीछे पहुंची ही थी कि उसने अपने भाई और बहन की आवाज सुनी जो मदद के लिए चिल्ला रहे थे । वह दुबारा पानी में कूदी और अपने भाई कर्दम और बहन कामिनी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया । उसने अपने दूसरे भाई कश्यप को भी बचाने का प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हुई और इस प्रक्रिया में उसने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया ।

2. अपनी कम उम्र के बावजूद कु० करुणा दूबे ने दो बच्चों का जीवन बचाने में साहस, तत्परता और सूझबूझ दिखाई तथा अपने भाई को बचाने के प्रयास में उसने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया ।

वरुण मित्रा,
राष्ट्रपति का उप सचिव

सं० 61–प्रेस/99 .—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री कोना श्रीनिवास राव,
सुपुत्र श्री मणिक्याला देसू,
जेन्टावानिपालेम,
डाकखाना वेन्दूरूपाथि,
मिनागापाका (मंडल), विशाखापत्तनम जिला,
आंध्र प्रदेश ।

दिनांक 15–8–1996 को लगभग 17.00 बजे एक रैफ्ट के चालक श्री गन्ता गोविन्दा रेफ्ट की क्षमता से अधिक अर्थात् 17 व्यक्तियों और उनके सामान से लादकर दूसरे तट की ओर ले जा रहे थे । चालक रेफ्ट को तेजी से और लापरवाही से चला रहा था जिसके कारण रेफ्ट नदी के बीच में आकर डूब गई और सारे व्यक्ति डूबने लगे । उसी समय खेत में काम कर रहे श्री कोना श्रीनिवास राव नामक एक व्यक्ति ने अपने जीवन की परवाह किए बिना तुरन्त नदी में छलांग लगा दी और 10 व्यक्तियों को डूबने से बचा लिया ।

2. श्री कोना श्रीनिवास राव ने अपने जीवन की परवाह किए बिना 10 व्यक्तियों को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

2. श्री पोटू वेंकट शेशैया,
गांव वेन्नूर, कोंडेपी मंडल,
प्रकाशम जिला,
आंध्र प्रदेश ।

वेन्नूर गांव के उत्तर में जमीन नम है । ग्रामवासियों/किसानों को अपने खेतों में काम करने के लिए वहां पहुंचने

के लिए नल्लावागू (सरिता) को पार करना होता है जिसके लिए वहां कोई पुल नहीं है । ग्रामवासी अपने खेतों तक पहुचने के लिए नदी के आर-पार दो बिजली के खंभे रख देते हैं । 25-10-1997 को भारी वर्षा के कारण नल्ला-वागू (सरिता) का पानी खंभों के ऊपर से बहने लगा । वहां पानी की गहराई सात फीट तक हो गई । 31-10-1997 को वेन्नूर और चौदावरम गांव के कई लोगों ने प्रचण्ड वेग से बहती धारा को देखा और एक किनारे खड़े हो गए । परंतु पास खड़े लोगों द्वारा सावधान किए जाने और चेतावनी दिए जाने के बावजूद चौदावरम गांव की निवासी सुश्री मचेरला रमाम्मा, सुश्री पिल्लै लक्ष्मी कान्तम्मा, सुश्री बूरी गोवन्दम्मा और सुश्री डरला डेम्मा नामक चार महिलाएं बेगवान धारा में घुस गईं । पानी की तेज गति के कारण उनका संतुलन बिगड़ गया और वे पानी में गिर गईं और डूबते वक्त वे जोर-जोर से चिल्लाने लगीं । घटनास्थल पर मौजूद श्री पोटू वेंकट शेशैया पानी में कूद पड़े और उन्होंने उपरोक्त चारों महिलाओं को सुरक्षित बचा लिया ।

2. श्री पोटू वेंकट शेशैया ने अपनी जान की परवाह किए बिना चार महिलाओं को नदी में डूबने से बचाने में साहस और बहादुरी का परिचय दिया ।

3. श्री अमर सिंह चौहान,
निवासी आर० जेड० 6-275, सागरपुर (पश्चिम),
शंकर पार्क,
नई दिल्ली ।

4. श्री इन्द्र सिंह,
सुपुत्र श्री नरेश कुमार उर्फ मस्त राम,
निकट पेट्रोल अखाड़ा बाजार,
कुल्लु (हिमाचल प्रदेश) ।

5. श्री जगदेव सिंह,
सुपुत्र श्री शिव चन्द,
निवासी गोशाल,
जिला लाहौल एवं स्पीति,
वर्तमान शंगरीबाग, डाकखाना निओली,
जिला कुल्लु (हि० प्र०) ।

6. श्री पवन कुमार,
सुपुत्र नगरु,
टण्डी जिला का बोढ़,
वर्तमान में लाहौल स्पीति,
तथन सेरी खड़ाहल डाकखाना,
निओली तहसील,
जिला कुल्लु (हि० प्र०) ।

दिनांक 22-6-1998 को सायं 8.30 बजे मैसर्स पाल ट्रैवल्स, चंडीगढ़ की एक बस सं० सी० एच०-डी०आई० 9583, 59 यात्रियों को लेकर मनाली से कुल्लु जा रही थी कि वह व्यास नदी के मध्य में रामशिला, कुल्लु पर व्यास नदी में गिर गई । बस पलट गई और पूर्णत: पानी में डूब गई और उसका ऊपर का एक छोटा-सा कोना ही दिखाई दे रहा था । बस की स्थिति बड़ी ही गंभीर थी । पानी की गति बहुत तेज थी और जलस्तर बढ़ता जा रहा था । बस में किसी तरह बाहर निकल आए कुछ यात्री, बाहर से दिखाई देने वाली बस की छत के दो फीट ऊंचे किनारे पर बैठे थे । घटना की जानकारी मिलने के बाद चार स्थानीय युवक घटनास्थल की ओर बढ़े और उन्होंने एक रस्सी का प्रबंध किया और उसे बस की छत पर बैठे यात्रियों की ओर फेंका । उन्होंने बस के एक हिस्से से रस्सी को बांधा । श्री अमर सिंह चौहान, श्री इंद्र सिंह, श्री जगदेव सिंह और श्री पवन कुमार के साथ रात के गहरे अंधकार में, अपनी जान को उत्पन्न गंभीर खतरे की परवाह किए बिना पानी की तेज धारा से लड़ते हुए नदी के किनारे से 100 फीट की दूरी पर बस की छत पर पहुंचे और उन्होंने 13 लोगों की जान बचाई ।

2. श्री अमर सिंह चौहान, श्री इन्द्र सिंह, श्री जगदेव सिंह और श्री पवन कुमार ने अपनी जान को उत्पन्न खतरे की अनदेखी करके 13 यात्रियों को नदी में डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

7. श्रीमती आशा देवी,
गांव बटलोठ, डाकखाना शिलारू,
तहसील थिओग,
जिला शिमला (हि० प्र०) ।

7 और 8 जुलाई, 1998 की मध्य रात्रि के लगभग 1.30 बजे जब श्रीमती आशा देवी अपने परिवार के सदस्यों के साथ गांव कलवां जिला शिमला में अपने कमरे में सो रही थी, एक चीता कमरे में घुस आया तथा उसके बिस्तर से उसके 3 वर्षीय लड़के (मास्टर गिरीश) को उठा ले गया । तब उसने दरवाजे के बाहर जाती हुई एक परछाई देखी । वह तुरन्त उस जंगली जानवर के पीछे भागी और अपने घर से 150 मीटर की दूरी तक अंधेरे में भागती चली गई । उसने जानवर को पकड़ लिया और जंगली जानवर के पंजों से अपने पुत्र को छीन लिया । इस कार्रवाई में उसके बदन पर अनेक घाव लगे ।

2. श्रीमती आशा देवी ने अपने प्राणों की परवाह किए बगैर चीते से अपने पुत्र की जान बचाने में साहस एवं सूझबूझ का परिचय दिया ।

8. श्री रंगीला राम,
गांव व डाकखाना आलमपुर,
तहसील जयसिंहपुर,
जिला कांगड़ा (हि० प्र०) ।

9. श्री सुनील कुमार,
गांव व डाकखाना, आलमपुर,
तहसील जयसिंह पुर,
जिला कांगड़ा (हि० प्र०)।

21-3-1998 को क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कालेज, हमीरपुर के तीन विद्यार्थी सुजानपुर कस्बे के निकट व्यास नदी में तैर रहे थे। अचानक वे एक भंवर में फंस गए। विद्यार्थियों में से एक श्री अभिजीत किनारे पर सकुशल लौट आया तथा दूसरा विद्यार्थी श्री एस० रघु नदी की तेज लहरों में डूब गया। तीसरे विद्यार्थी पंकज जुनेजा ने सहायता के लिए चीख पुकार की क्योंकि वह डूब रहा था। उसकी चीख पुकार सुनकर मछलियां पकड़ रहे दो स्थानीय मछुआरे श्री रंगीला राम तथा श्री सुनील अपने प्राणों को खतरे में डालकर नदी में कूद पड़े। श्री रंगीला राम ने पंकज का एक हाथ पकड़ा तथा श्री सुनील कुमार ने उसका दूसरा हाथ पकड़ा और दोनों अपने प्राणों को खतरे में डालकर पंकज को नदी से बाहर ले आए।

2. श्री रंगीला राम तथा श्री सुनील कुमार ने दूसरे विद्यार्थी श्री एस० रघु की भी तलाश की परन्तु वे उसका पता नहीं लगा सके।

3. श्री रंगीला राम और श्री सुनील कुमार ने अपनी जान को जोखिम में डालकर दो विद्यार्थियों को नदी में डूबने से बचाने में साहस एवं सूझबूझ का परिचय दिया।

10. मास्टर प्रमोद ई०,
पुत्र वीरप्पा, द्वारा ए० पी० नागप्पा गौड़ा,
अथिकोदिगे, चक्रनगर,
होशानगर तालुक, शिमोगा,
कर्नाटक।

दिनांक 4-7-1997 को लगभग 6.30 बजे सायं तीन व्यक्ति नागप्पा गौड़ा के अतिथिकोदिगे, तालुक होशानगर जिला शिमोगा में एकांत में स्थित मकान पर आए। वे घर के अन्दर जबरदस्ती घुस गए और ए० पी० नागप्पा गौड़ा की पत्नी श्रीमती जनकाम्मा पर हमला करने के बाद लूटपाट की। वीरप्पा के 9 वर्षीय पुत्र प्रमोद ने स्कूल से लौटते समय इस घटना को घटित होते देखा। देखते ही वह उस मकान से लगभग एक फर्लांग की दूरी पर स्थित रवीन्द्र नामक व्यक्ति के खेतों की ओर दौड़ा। उसने श्री ए० पी० नागप्पा गौड़ा के मकान में घटित घटना की जानकारी रवीन्द्र को दी। तत्काल वह रवीन्द्र के साथ घटना स्थल की ओर दौड़ा और श्रीमती जनकाम्मा के प्राणों की रक्षा की। श्री रविन्द्र ने हमलावरों का डटकर मुकाबला किया और आशिक रहमान नामक एक हमलावर को काबू में कर लिया। इस दौरान रवीन्द्र भी छुरा लगने से जख्मी हो गया। शेष दोनों अभियुक्त नकदी और 10,000 रू० के जेवरात समेत भाग गए।

2. मास्टर प्रमोद के शौर्यपूर्ण, साहसिक और सामयिक कार्य ने एक महिला की जान बचाई और एक डाकू को पकड़वाने में मदद की।

11. श्री कुमार मैलारप्पा,
द्वारा आर० एस० जावर बाजरा,
बेलारी रोड, बाइडरगेरी, गडग,
कर्नाटक।

14-2-1997 को 15 वर्षीय कुमार सिद्दू और कुमार जयानवय्या पंचाकसरैया हीरेमथ नामक दो लड़के विकदाकट्टी गांव स्थित हुगर कुंए में तैरने का अभ्यास कर रहे थे। तैरते हुए वे डूबने लगे। इसी बीच उन पर द्वितीय वर्ष के एक छात्र मलारप्पा की नजर पड़ी जो तैरने के लिए उसी कुंए पर गया हुआ था। अपने जीवन की परवाह न करते हुए वह कुंए में कूद पड़ा और दोनों छात्रों के प्राण बचाए। कुंए की गहराई 34 फीट है और घटना के समय जल स्तर 18 फीट गहरा था तथा कुंए की चौड़ाई 72 फीट है।

2. श्री कुमार मैलारप्पा ने अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए दोनों लड़कों को डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

12. श्री कुमती नागेश,
पुत्र कुमती शेषाखावी,
कुमति हाउस,
मादिकाल उप्पुंडा गांव,
तालुक कुंदापुर, जिला उडुप्पी,
कर्नाटक।

दिनांक 5-8-97 को मादिकाल उप्पुंडा गांव के श्री अज्जैया बीदू और 8 अन्य मछुआरे सुबह-सुबह मछली पकड़ने के लिए शिरूर के निकट अरब सागर में गए। भारी वर्षा और चक्रवात के कारण उनकी नाव समुद्र में फंस गई। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी मछुआरे गहरे जल में डूबने लगे और मदद के लिए चिल्लाने लगे। इस घटना के समय जल की गहराई लगभग 25 फीट व जल तरंगों की गति 100 कि० मी० प्रति घंटे थी दूसरी नाव में मछली पकड़ने के लिए जा रहे कुमति नागेश की नजर इन व्यक्तियों पर पड़ी जो मदद के लिए चिल्ला रहे थे। अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए वह तत्काल पानी में कूद पड़ा और सभी 9 मछुआरों का जीवन बचा लिया।

2. श्री कुमति नागेश ने अपने जीवन को भारी जोखिम में डालकर 9 व्यक्तियों को डूबने से बचाने में साहस, तत्परता और सूझबूझ का परिचय दिया।

(मरणोपरांत)

13. श्री नरेन मिरांडा,
पुत्र श्री जोमक मिरांडा,
निवासी हिककाम क्वार्टेशन,
गांव मचात्तु, तालुक मार्कुपुर,
जिला डी० के०,
कर्नाटक।

31-5-96 को लगभग 2.30 बजे अपराह्न नवीन रीगो और नरेन मिरांडा मचात्तु गांव स्थित वराही नदी में स्नान करने के लिए गए। नदी की चौड़ाई 39 मीटर थी और नदी में जल की गहराई 5 मीटर थी।

2. स्नान करते समय श्री नवीन रीगो एकाएक नदी में डूबने लगा। इसे देखकर श्री नरेन मिरांडा ने अपने जीवन की अति खतरे की परवाह न करते हुए श्री नवीन रीगो को बचाने के लिये तुरन्त नदी में छलांग लगा दी। श्री नवीन रीगो ने श्री नरेन मिरांडा को पकड़ लिया। इस कारण वे दोनों नदी में डूब गये। तत्काल ही कुछ अन्य लोग घटना स्थल पर पहुंच गये और लाठियों तथा रस्सी के सहारे उन्हें बाहर निकाला। तब तक नवीन रीगो दम तोड़ चुका था और नरेन्द्र मिरांडा की सांस चल रही थी। उसे तुरन्त के० एम० सी० अस्पताल, मनिपाल पहुंचाया गया जहां उसकी भी मृत्यु हो गई।

3. श्री नरेन मिरांडा ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए एक व्यक्ति के प्राणों को बचाने के लिये अद्भुत साहसपूर्वक कार्य किया और इस दौरान अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

14. कुमारी राजेश्वरी
रामचन्द्र भट,
द्वारा रामचन्द्र नारायण भट,
संपुरवण होन्नली, कोप्पकोवियर्ल
गांव होसमाने, तालुक सिरसी
कन्नड़, कर्नाटक।

9-11-96 की सुबह लगभग 5 वर्षीया कुमारी राजेश्वरी रामचन्द्र भट और लगभग 4 वर्षीया कुमारी भारती अपने घर के पास खेलते-खेलते खेत में पहुंच गई। खेलते समय कुमारी भारती दुर्घटनावश फिसलकर खेत में स्थित तालाब में गिर पड़ी और डूबने लगी। तालाब की चौड़ाई 14 फीट और घटना के समय पानी की गहराई 4 फीट थी। तालाब के किनारे-किनारे कीचड़ था और तालाब में पानी तक पहुंचने के लिये किनारे पर एक पत्थर रखा था। दुर्घटना घटित होते देख कुमारी राजेश्वरी एक क्षण भी गंवाए बिना तालाब में कूद पड़ी और उसने एक हाथ से पत्थर को पकड़ कर दूसरे हाथ से कुमारी भारती को डूबने से बचाकर उसका जीवन बचा दिया।

2. कम आयु के बावजूद कुमारी राजेश्वरी ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर एक लड़की को डूबने से बचाने में अद्भुत साहस, तत्परता और सूझबूझ का परिचय दिया।

15. श्री सरदार,
पुत्र श्री दयाप्पा भण्डरवाद
निवासी इटागा, तालुक जेवरागी
जिला गुलबर्गा, कर्नाटक।

29-4-1995 को सुबह सैबाना नामक एक 11 वर्षीय लड़का अपनी बकरियां चराने के लिये भीमा नदी (जो इटागा और भंडरवाद गांव के बीच बहती है) के तट पर गया हुआ था। बाद में दोपहर 12 बजे के आसपास वह अपनी एक बकरी को नदी में स्नान कराने ले गया। उस समय नदी में एक मगर ने सैबाना की दाहिनी टांग पकड़ ली और उसे पानी में घसीटने लगा। बालक सैबाना मदद के लिये चिल्लाया। यह देख दयाप्पा नामक एक लड़का जो नदी के तट पर खड़ा था, दौड़कर अपने चाचा सरदार के पास पहुंचा और पूरी घटना बयान की। श्री सरदार तुरन्त दौड़ कर घटना स्थल पर पहुंचा और देखा कि एक मगर बालक को घसीट कर नदी तट से 500 फीट दूर धारा के बीचोबीच लिये चला जा रहा था। वह नदी में कूद पड़ा और तैरते हुए बालक के पास पहुंचा तथा उसका एक हाथ पकड़ कर नदी में ही मगर के मुंह से उसे खींचने की कोशिश की। 15-20 फीट गहरे जल में मगर के साथ एक घण्टे की भिड़न्त के बाद मगर अन्ततः बालक अपने जबड़े से छोड़ कर पानी में चला गया। इस प्रकार श्री सरदार ने बालक सैबाना को मगर के मुंह से बचाया। इसके बाद बालक सैबाना को देवल गंगापुर के सरकारी अस्पताल में दाखिल कराया गया क्योंकि उसकी टांग, जांघ, अण्डकोष, मूत्र नली आदि में घाव हो गया था।

2. श्री सरदार ने अपने जीवन को जोखिम में डालकर नदी के बीचोबीच मगर के जबड़े में फंसे एक बालक का जीवन बचाने में अद्भुत साहस, तत्परता और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

16. श्री सी० जे० स्टीफन,
चाक्कालुंगाल वीटिल,
पी० ओ० छपथ,
जिला इडुक्की,
केरल।

29-7-1997 को रंजीना नामक एक महिला हनी (3 1/2 वर्षीया) और जाबी (7 वर्षीय) नामक दो बच्चों के साथ स्कूल जा रही थी। जब वे लोग इडुक्की ज़िले के एलाप्पारा कट्टाप्पना रोड पर पेरियार नदी के ऊपर छपथ पुल पर पहुंचे उस समय तेज गति से आ रही निजी परिवहन की एक बस का नियंत्रण समाप्त हो गया। बस ने पीछे से उस महिला और बच्चों को टक्कर मार दी जिससे वे लोग गहरी नदी में गिर पड़े। बरसात का महीना होने के कारण नदी जलमय थी और उसमें ऊंची लहरें उठ रही थीं। महिला और बच्चे नदी में गिर पड़े और नदी की तेज जलधारा के कारण बह कर गिरने के स्थान से 200 मीटर दूर चले गये।

न तो बस के यात्री और न ही वहां एकत्र ग्रामीण उन्हें बचाने के लिये नदी में कूदने का साहस कर सके। घटना के विषय में सुनते ही श्री स्टेफेन एक क्षण की भी देर किये बिना दौड़ कर घटना स्थल पर पहुंचे और अपने जीवन को जोखिम में डालकर उन्होंने नदी में छलांग लगा दी। किसी प्रकार उन्होंने महिला के बाल पकड़कर नदी को पार किया और उसका जीवन बचा लिया। पुनः तैरकर नदी में गये और एक-एक कर दोनों बच्चों का जीवन बचा लिया।

2. अपने जीवन को जोखिम में डालकर श्री स्टैफेन ने साहस और तत्परता से दो बच्चों सहित तीन जानें बचाई।

17. श्री मैथ्यू जोश, पुनत्तू हाऊस, पो० आ० बेलिया-माट्टोम,
थोडुपुजा, जिला इडुकी, केरल।

1-8-1997 को प्रातः लगभग 9 बजे श्री अगस्थी, श्री वत्सासी मथाई की जमीन पर अपनी गाय चरा रहा था। अनजाने में उसने बिजली के एक टूटे तार का स्पर्श कर लिया। एकाएक गाय गिर पड़ी और मर गई। बिजली के तेज झटके से श्री अगस्थी अचेत होकर गिर पड़ा। यह दुर्घटना जो टेंशन सिंगल फेज लाइन के एक इलैक्ट्रिक कण्डक्टर के टूटने के कारण हुई थी और दुर्घटना के समय विद्युत आपूर्ति का वोल्टेज 230 ए० सी० था।

2. गाय का रम्भाना सुन कर श्री मैथ्यू जोश जो पास ही में एक अन्नानास के बाग में काम कर रहे थे, दौड़ कर घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने इस दुर्घटना में निहित खतरे को भांप लिया। उन्होंने सूखी लकड़ी की एक लाठी से बिजली के तार को अगस्थी के शरीर से हटा दिया। श्री मैथ्यू जोश ने श्री अगस्थी के पुत्र को उस समय किनारे धकेल कर उसकी जीवन रक्षा की जब वह इलैक्ट्रिक सर्किट से चिपके अपने पिता को पकड़ने जा रहा था। तत्पश्चात् वहां एकत्र सभी लोगों ने अगस्थी को अस्पताल पहुंचाने में मदद की। श्री मैथ्यू जोश की सामयिक सहायता से गम्भीर रूप से घायल एवं जले हुए व्यक्ति की जान बच सकी।

3. श्री मैथ्यू जोस ने अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए दो व्यक्तियों के प्राण बिजली का करंट लगने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

18. श्री ई० रमेश,
द्वारा कोमट्टिल गंगाधरन नैय्यर,
इराविमंगलम,
नाडाथारा ग्राम,
त्रिस्सूर, केरल।

दिनांक 23-9-97 को एक वैन, जिसमें तिरूवनन्तपुरम के पास के वेनजारम्योड्डू के एक परिवार के 22 सदस्य थे, गुरूवायूर मंदिर जा रही थी। यह जिला त्रिचूर में अम्बालूर में एक लारी से टकरा गई और 20 फुट गहरी कीचड़ और पानी से भरी खाई में गिर गई। टक्कर की जोर की आवाज और वैन के यात्रियों की चीख सुनकर घटनास्थल पर बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। परन्तु दुर्भाग्यवश किसी ने भी उन्हें बचाने के लिए आगे आने का साहस नहीं किया क्योंकि वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी और खाई में दलदल थी तथा यह लगभग 20 फुट गहरी थी।

2. श्री मणिकान्तन नैय्यर की चीख सुनकर वैन में जा रहे परिवार के एक सदस्य, जो किसी कारण वैन में नहीं गए थे, श्री रमेश, जो घटनास्थल के पास अपने पिता के निवास पर थे, अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए, तालाब में कूद गए तथा कीचड़ और पानी में से बहादुरी से तैरते हुए श्री मणिकान्तन नैय्यर की सहायता से उनकी बेटी सहित 12 व्यक्तियों का जीवन बचाया। पानी में बहुत अधिक समय तक बचाव के लिए प्रयास करते रहने के बाद श्री रमेश को बाद में अस्पताल में दाखिल कराया गया। इस दुखद दुर्घटना में एक बच्चे सहित 9 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

3. श्री रमेश ने अपने जीवन को खतरे में डाल कर समय पर वीरता का कार्य कर 12 व्यक्तियों को खाई में डूबने से बचाया।

19. श्री ईडाचेरियन राजीव,
पुत्र वट्टियम,
मुरूगलायम हाऊस,
मट्टूलउत्तरी डाकघर,
कन्नूर जिला, केरल।

दिनांक 12-8-1997 को अपराह्न लगभग 4 बजे श्री के० के० अब्दुल मजीद (42 वर्ष), श्री के० वी० विलियम, (17 वर्ष) और श्री अब्दुल नजार (18 वर्ष) नामक तीन मछुआरे देशी नाव में समुद्र में मछली पकड़ने गए। जब नाव मट्टूलउत्तरी से एक कि०मी० दूर थी, यह समुद्र में उलट गई तथा वे सभी समुद्र में गिर पड़े। उस समय समुद्र उफान पर था। घटनास्थल पर समुद्र की गहराई लगभग 30 मीटर थी। किनारे पर खड़े जिन लोगों ने इस दुर्घटना को देखा वे निस्सहाय चिल्ला रहे थे। किनारे से चीख-पुकार सुनकर पास में चाय की दुकान पर चाय पी रहे श्री ईडाचेरियन राजीव घटनास्थल की ओर दौड़े। यह देखकर कि तीन व्यक्तियों का जीवन खतरे में है, अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए श्री राजीव एक लम्बी रस्सी लेकर समुद्र में कूद पड़े। वह किसी तरह उन व्यक्तियों के पास पहुंच गए जो समुद्र में अपना जीवन बचाने के लिये संघर्ष कर रहे थे। रस्सी का इस्तेमाल कर श्री राजीव तीन व्यक्तियों को किनारे पर सुरक्षित ले आए।

2. श्री ईडाचेरियन राजीव ने तीन व्यक्तियों के प्राण डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

20. कुमारी आर० एस० अप्सरा,
आयानीवकट्ट कोनाल्लू पुथेन वीडू,
मडावूर डाकघर, पल्लोक्कल,
मडावूर, तिरूवनन्तपुरम जिला,
केरल।

दिनांक 25-11-97 अपराह्न् 5.30 बजे 7 वर्षीय लड़का मास्टर अरविन्द कृष्णन, अपनी बहिन अप्सरा (8 वर्षीय) के साथ खेलते हुए अनजाने में अपने घर के पास के कुएं में गिर गया। यह कुआं 8 मीटर गहरा और $2\frac{1}{2}$ मीटर चौड़ा था। इस घटना के समय घर में कोई नहीं था।

2. अपने भाई को खतरे में देखते हुए, कुमारी अप्सरा ने कुएं से पानी निकालने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रस्सी ली और सहायता के लिए जोर से चिल्लाते हुए इसे कुएं में डाल दिया। कुएं में लड़के ने किसी तरह रस्सी पकड़ ली जिससे वह डूबने से बच गया। कुमारी अप्सरा की चीख सुनकर उनके एक पड़ौसी श्री शाजी घटनास्थल की ओर दौड़े तथा लड़के का जीवन खतरे में देखकर वह अचानक कुएं में उतर गए और लड़के को अपने कंधों पर बैठा लिया तथा उसे कुएं से बाहर सुरक्षित ले गए।

3. छोटी उम्र की होने के बावजूद कुमारी अप्सरा ने अपने भाई का जीवन डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

21. श्री टी० प्रदीप कुमार,
किझाक्कुमकारा किझाक्केथिल,
करमवेल डाकघर ईलान्थूर,
पथनमथिट्टा जिला,
केरल।

दिनांक 11-03-1996 की रात्रि को श्री सुधाकरन नहर के पास के रास्ते से अपने घर लौट रहे थे वह अनजाने में फिसल गए और नहर में गिर गए तथा बहकर दूर चले गए। नहर की कंक्रीट की दीवार 4.4 मीटर ऊंची है जो ऊपर से नीचे की ओर ढलाई पर है तथा इनकी चौड़ाई ऊपरी भाग में 10.2 मीटर है और निचले भाग में 5 मीटर है। घटना के समय पानी का स्तर लगभग 3 मीटर था और पानी का बहाव बहुत तेज था।

2. जब श्री सुधाकरन डूबने लगे तो वह सहायता के लिए चिल्लाए। नहर के किनारे पर इकट्ठे हुए पास में रहने वाले व्यक्ति उन्हें बचाने में असमर्थ थे क्योंकि नहर की दीवार फिसलन वाली थी और पानी का बहाव तेज था। उनमें से किसी ने भी उसकी जान बचाने के लिए नहर में कूदने का साहस नहीं किया। इसी समय श्री टी० प्रदीप कुमार वहां पहुंचे। उस व्यक्ति की जान खतरे में देखकर वह अपने जीवन को खतरे की परवाह न करते हुए तुरन्त नहर में कूद गए। बहुत प्रयास करने के बाद वह डूब रहे व्यक्ति को किसी तरह किनारे पर ले आए परन्तु वह उन्हें साइड की दीवार की ओर से किनारे पर नहीं ले जा सके क्योंकि यह बहुत फिसलन वाली थी। इस कोशिश में श्री टी० प्रदीप कुमार थक गए और नदी में डूबने लगे।

3. इस संकट की घड़ी में श्रीमती वी० ए० ऊषा कुमारी ने, जो नहर के किनारे से इस घटना को देख रही थी, अपनी साड़ी का दूसरा किनारा मजबूती से अपने हाथ में पकड़कर अपनी साड़ी नहर में डाल दी। उन्होंने अन्य व्यक्तियों की सहायता से डूबते हुए दो व्यक्तियों को एक-एक कर बाहर निकाला।

4. श्री टी० प्रदीप कुमार ने अपने जीवन की बिल्कुल परवाह न करते हुए एक व्यक्ति का जीवन डूबने से बचाने में साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

22. मास्टर युमनाम जयदेव सिंह,
सुपुत्र श्री युमनाम सनथोई सिंह,
नमबोल बाजार, जिला—विशनुपुर,
मणिपुर।

दिनांक 6-7-1998 को प्रातः लगभग 9.30 बजे नामबोल आवंग में नामबोल नदी को लकड़ी के टूटे हुए पुल (100 फुट चौड़ा और पानी के स्तर से 10 फुट ऊंचा) से पार करते हुए एक छोटा लड़का (आयु $3\frac{1}{2}$ वर्ष) पुल में सुराख से निकल कर उफनती नदी में गिर गया। उसी समय लगभग 9 वर्षीय मास्टर वाई० जयदेव सिंह नामक लड़के ने, जो नदी के पास से गुजर रहा था, इस लड़के को नदी में गिरते देखा। वह उस लड़के की ओर तेजी से दौड़ा और नदी में कूद गया तथा लड़के को तलाश किया। उसने लड़का ढूंढ लिया और उसे उसकी बाहों से पकड़ लिया। पानी का तेज बहाव उन दोनों को लगभग 50 फुट बहा कर ले गया। उस लड़के की एक बांह पकड़ कर मास्टर जयदेव किनारे की ओर जाने के लिए बहुत कठिनाई से लगभग 100 फुट तैरा तथा इस प्रकार उस लड़के को डूबने से बचाया।

2. छोटी उम्र के बावजूद मास्टर वाई० जयदेव सिंह ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए एक लड़के का जीवन डूबने से बचाने में साहस और तत्परता का परिचय दिया।

23. मास्टर अलैग्जेन्डर खैरनायर,
मावलई—मोइन्स रिम,
शिलांग, ईस्ट खासी हिल्स,
जिला मेघालय।

26-8-1997 को सांय लगभग 3.30 बजे स्कूल से लौटते समय मास्टर खैरनायर जल क्रीड़ा स्थल के निकट उमियम झील की ओर तैरने के लिए गए। पास में अन्य अनेक लोग थे जो मछली पकड़ने के लिए वहां गए हुए थे। इस झील की चौड़ाई लगभग 1000 मीटर और गहराई 30/35 मीटर है। यकायक झील के निकट मौजूद हर व्यक्ति ने एक आदमी को डूबते हुए तथा मदद के लिए पुकारते हुए देखा। उस आदमी को डूबता देखकर मास्टर अलैग्जेन्डर खैरनायर ने आस-पास देखा और किनारे पर खड़ी एक नाव की ओर दौड़ा। उसने एक हाथ से नाव को पकड़ा तथा अपनी जान को जोखिम की तनिक भी परवाह किए बिना तैरते हुए उस डूबते आदमी की ओर गया। किसी प्रकार वह उस व्यक्ति को नाव से चिपटाने में कामयाब हो गया तथा उसे सुरक्षित किनारे पर ले आया।

2. मास्टर अलैग्जेन्डर खैरनायर ने अपनी जान को जोखिम की परवाह न करते हुए एक लड़के को डूबने से जान बचाने में साहस एवं तत्परता का परिचय दिया।

24. मास्टर रोमू छेत्री (मरणोपरांत)
बाजार बेगंकान, डॉरपुइ,
आइजौल, मिजोरम।

20–5–1998 को मास्टर रोमू छेत्री ने एक मिनी ट्रक की पूरी तरह सफाई करने के लिए उसे रुकनी नदी (हाइथाना) पर ले जाने के लिए, निर्णय किया। उसके साथ उसका चचेरा भाई (सहायक के रूप में) तथा गांव की दो युवा लड़कियां गई थीं।

2. उनमें से जैनी नाम की एक लड़की जो ट्रक की धुलाई कर रही थी, फिसलकर नदी में जा गिरी। नदी की गहराई लगभग 15 से 40 फुट तथा चौड़ाई लगभग 100 फुट थी। पानी की तेज धार उसे नदी के बीचों-बीच ले गई और वह डूबने लगी थी। मास्टर रोमू ने जो एक अच्छा तैराक नहीं था, जैनी को बचाने के लिए फौरन नदी में छलांग लगा दी। बहुत प्रयास के बाद वह उस लड़की को सुरक्षित स्थान की ओर धकेलने में सफल हो गया और इस प्रक्रिया में वह स्वयं नदी के गहरे दलदल में फंस गया जहां से वह फिर निकल नहीं सका।

3. इस घटना के तुरन्त बाद स्थानीय लोगों की मदद से उसकी तलाश की गई और 2 घंटे बाद उसका शव 15 फुट की गहराई में मिला।

4. मास्टर रोमू ने एक लड़की की जान बचाने के प्रयास में साहस एवं सूझ-बूझ का परिचय दिया और इस कार्य में उसने अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

25. मास्टर सत्यभामा साहू,
पुत्र चन्द्रमणि साहू,
गांव जेकइकेला,
थाना बोनइ,
जिला सुन्दरगढ़,
उड़ीसा।

1–10–1997 को दोपहर लगभग 12 बजे मास्टर बिसमा बहेड़ा उम्र 6 वर्ष, अनिल कुमार बहेड़ा, उम्र 9 वर्ष, तथा सत्यभामा साहू, उम्र 12 वर्ष के साथ जकेइकेला स्नान घाट पर बह्माणी नदी में स्नान कर रहा था। घटना के समय पानी की गहराई लगभग 2 1/2 फुट से 3 फुट थी। नदी के तट पर अनिल कुमार बहेड़ा के पिता श्री अक्षय कुमार बहेड़ा, अक्षय कुमार बहेड़ा के बड़े भाई श्री देवानन्द बहेड़ा एवं ए०पी० आर० कांस्टेबल, श्री हिमांशु प्रधान बैठे गपशप कर रहे थे। जब वे तीनों बच्चे स्नान कर रहे थे तो मास्टर बिसमा नदी में गहराई तक चला गया, जहां गहराई लगभग 6 से 7 फुट तक थी और डूबने लगा। जब वह डूब रहा था तो उसी समय मास्टर सत्यभामा साहू उसके नजदीक गया, उसे पकड़ा तथा उसे बचाने की कोशिश की। दूसरा लड़का अनिल कुमार बहेड़ा भी उसके पास गया। चूंकि बिसमा बहेड़ा ने मास्टर सत्यभामा साहू को पकड़ रखा था इसलिए सत्यभामा साहू उसे बचा नहीं सका। दूसरी तरफ वह भी डूबने लगा था। इसी बीच बह्माणी नदी के तट पर बैठे गपशप कर रहे श्री अक्षय कुमार बहेड़ा, श्री देवानन्द बहेड़ा और श्री हिमांशु प्रधान नदी में कूद गए। श्री हिमांशु प्रधान ने मास्टर बिसमा बहेड़ा को, श्री देवानन्द बहेड़ा ने मास्टर सत्यभामा साहू को, तथा श्री अक्षय कुमार बहेड़ा ने मास्टर अनिल कुमार बहेड़ा को बचा लिया और सुरक्षित स्थान पर ले आए।

2. मास्टर सत्यभामा साहू ने डूबते हुए लड़के तक तेजी से पहुंचने में और अपनी जान को जोखिम में डालकर उसकी जान बचाने का प्रयास करने में अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

26. श्री अंशुल कुमार नन्दवाना, (मरणोपरांत)
सुपुत्र श्री कुंज बिहारी नन्दवाना,
1–बी–19, तलवंडी,
कोटा, राजस्थान।

27. श्री मनोज वर्मा, (मरणोपरांत)
सुपुत्र श्री लाल चन्द वर्मा,
निवासी विज्ञान नगर,
कोटा, राजस्थान।

28. श्री राजकुमार ठठेरा, (मरणोपरांत)
सुपुत्र श्री गिरधर गोपाल,
ठठेरा अग्रसेन बाजार,
कोटा (राजस्थान)।

20–8–1995 को तोली हैल्थ सेंटर के सदस्यों का एक दल चित्तौड़गढ़ में पर्यटक स्थलों का भ्रमण करने गया। इन सदस्यों में से चार व्यक्ति श्री अंशुल कुमार नन्दवाना, श्री राजकुमार ठठेरा, श्री लक्ष्मी नारायण सोंगरा हैल्थ सेंटर के मालिक श्री मनोज वर्मा के साथ नीचे जल-प्रपात देखने गए। एक परिवार की कुछ महिलाएं एवं बच्चे वहां स्नान कर रहे थे। अचानक पानी का प्रवाह बढ़ गया और महिलाएं एवं बच्चे पानी में घिर गए तथा मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगे। चारों लड़के मानवता एवं चिन्ता का प्रदर्शन करते हुए अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना उन्हें बचाने के लिए पानी में उतर गए और मानव श्रृंखला बना ली। उन्होंने एक-एक करके 3 बच्चों को बचा लिया। तब तक पानी का स्तर और भी बढ़ गया था। जब वे दो महिलाओं को बचाने का प्रयास कर रहे थे तभी एक महिला श्रीमती विमला सिंघल फिसल गई और उसने श्री अंशुल कुमार को पकड़ लिया जिसके कारण मानव-श्रृंखला टूट गई और वे अपना नियंत्रण खो बैठे। श्री लक्ष्मी नारायण को छोड़कर शेष सभी डूब गए तथा इस प्रक्रिया में उनकी जान चली गई। कुल मिलाकर छः लोगों की जानें गईं।

2. श्री अंशुल कुमार मल्होत्रा, श्री मनोज शर्मा और श्री राजकुमार ठठेरा ने 5 बच्चों एवं 2 अन्य महिलाओं की जान बचाने में अपने जीवन का बलिदान देकर साहस तथा सूझबूझ का परिचय दिया।

29. श्री दिग्विजय सिंह (मरणोपरान्त)
प्लाट सं० 54, चन्द्र नगर,
गोपालपुरा बाइपास,
जयपुर, राजस्थान।

16-4-1996 को हमीरपुर गांव में एक व्यक्ति कुएं में गिर पड़ा। कुआं 30 फीट गहरा था और गोलाकार था जिसका व्यास 11 फुट था तथा कुएं में पानी का स्तर 6 फुट था। उसे बचाने की जान बचाने के लिए सबसे पहले श्री हनुमान एक रस्सी की सहायता से कुएं के अन्दर गए। जहरीली गैस के कारण वे कुएं के अन्दर ही फंस गए। तत्पश्चात् श्री दिग्विजय सिंह श्री हनुमान को बचाने के लिए अपनी जान को जोखिम की तनिक भी परवाह किए बिना कुएं के अन्दर गए। जहरीली गैस के कारण वे भी बेहोश हो गए तथा उनकी मृत्यु हो गई।

2. श्री दिग्विजय सिंह ने कुएं में डूबते से एक व्यक्ति की जान बचाने के प्रयास में साहस एवं वीरता का परिचय दिया तथा इस प्रक्रिया में अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

30. श्री महेन्द्र सिंह चौहान,
सुपुत्र श्री नेमीचन्द्र चौहान,
शिवनगर, महामन्दिर,
जोधपुर, राजस्थान।

22-6-1996 को खिन्सर गांव में बाढ़ आई हुई थी। गांव से लगभग 1 कि० मी० की दूरी पर एक बस नागौर-जोधपुर सड़क पर बाइपास पर बाढ़ के पानी में फंस गई। बस में फंसे यात्रियों की जान बचाने के लिए खिन्सर गांव के श्री महेन्द्र सिंह चौहान बाढ़ के पानी में घुस गए। वे एक-एक करके तीन व्यक्तियों को अपने कंधों पर उठा लाए और उन्हें सुरक्षित स्थान पर लाकर उनकी जान बचाई।

2. श्री महेन्द्र सिंह ने अपनी जान को जोखिम की परवाह किए बिना डूबने से तीन व्यक्तियों की जान बचाने में साहस, तत्परता एवं सूझबूझ का परिचय दिया।

31. श्री तेजवीर सिंह,
बांध परियोजना कैम्पस,
सरिस्का, राजस्थान।

20 दिसम्बर, 1997 को एक तेंदुआ सरिस्का वन्य जीव अरण्य से बाहर निकल आया और उसे गांव खोता-का-बास पुलिस थाना मालाखेड़ा के निकट देखा गया। उसने तीन ग्रामीणों पर हमला करके उन्हें घायल कर दिया और फिर सोहनिया सैनी की झोंपड़ी के अन्दर बैठ गया। ग्रामीणों में भय व्याप्त था।

2. सूचना मिलने पर श्री तेजवीर सिंह क्षेत्र निदेशक, सरिस्का, एक बचाव दल को लेकर गांव खोता-का-बास पहुंचे। जिस घर में तेंदुआ घुसा हुआ था उसके निकट एक हजार से अधिक लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई थी। यह एक छत की छप्पर वाला कच्चा झोंपड़ीनुमा मकान था तथा इसके दोनों तरफ बिना दरवाजों के दो गेट थे। तेंदुएं को बेहोश करने के लिए टीका प्रक्षेपक दागने का निर्णय लिया गया। वन रक्षकों ने तेंदुए को मकान से बाहर निकलने से रोकने के लिए दोनों दरवाजों पर बड़े बड़े कम्बल लगा दिए। तेजवीर सिंह झोंपड़ीनुमा मकान की छप्पर वाली छत पर चढ़ गए और छत में एक भाल की सहायता से छेद बनाया एवं "ड्रैगन लाइट" की सहायता से झोंपड़ी में घुसे। वह अगला कदम उठाने की तैयारी कर ही रहे थे कि तेंदुआ छप्पर वाली छत से कूदा और तेजवीर सिंह पर हमला कर दिया। उसने उनका हाथ काट खाया तथा उन्हें और भी कई गम्भीर चोटें आईं। तब तेंदुआ दूसरी तरफ कूदा और साथ के एक कच्चे छप्पर में घुस गया। श्री तेजवीर सिंह ने धैर्य और साहस नहीं खोया और तेंदुए को जिन्दा पकड़ने का प्रयास किया। उन्होंने तेंदुए को बेहोश कर दिया। एक दरी की सहायता से वह तेंदुए पर झपटे और उस पर दरी डालकर उसे पकड़ लिया।

3. श्री तेजवीर सिंह ने अपने प्राणों की परवाह किए बगैर ग्रामीणों की जान बचाने में तथा तेंदुएं को जीवित पकड़ने में साहस, वीरता और सूझ-बूझ का परिचय दिया।

32. श्री तपसी दासम्याल भूटिया,
अध्यापक, स्थानिक के सिक्किम,
डाकघर व नगर गंगटोक, सिक्किम।

19-1-98 को प्रातः 10.10 बजे के लगभग गंगटोक के निकट देवराली बाजार के बिल्कुल पास शहरी क्षेत्र में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र की घड़ियां बनाने की इकाई सिक्किम टाइम कारपोरेशन के परिसर में एक रीछ घुस आया। घड़ी इकाई के सभी कर्मचारी उस समय चाय का समय होने के कारण प्रांगण में अथवा कैण्टीन में थे। रीछ के नजर आते ही कर्मचारी, जिनमें से अधिकांश महिलाएं थीं भयभीत हो गई और अधिकांश घड़ियां बनाने के भवन के अन्दर की ओर भागीं जहां रीछ ने उनका पीछा किया जबकि 30 के लगभग महिलाएं प्रशिक्षण एवं सामान कक्ष में घुस गई और उसे अन्दर से बन्द कर लिया। दुर्भाग्य से कुछ को बरामदे में ही उस जानवर का सामना करना पड़ा। वहां रीछ ने एक लड़की पर हमला करके उसे घायल कर दिया। दो अन्य लड़कियों को भी मामूली चोटें आईं। हालांकि इन घायल लड़कियों को भी स्नानघर में घुसने का मौका मिला किन्तु जब रीछ साथ के अन्य कमरों की ओर बढ़ रहा था तब उन्हें भी अन्य लोगों के साथ स्नानघर तथा सामानघर में घसीट लिया गया। ये स्थान भी खतरे से बाहर नहीं थे क्योंकि रीछ लकड़ी के दरवाजों पर बार बार टक्कर मारकर अन्दर घुसने की कोशिश कर रहा था तथा ये कभी भी टूट सकते थे।

2. तब रीछ साथ वाले प्रशीतन संयंत्र कक्ष में घुस गया। श्री तपसी तामस्याल भूटिया बाहर से रीछ की हरकतें देख रहा था। वह जंगली जानवर को प्रशीतन कक्ष के अन्दर रोकने में सफल हो गया। श्री भूटिया ने अपनी परवाह किए बगैर अदम्य साहस से मुख्य दरवाजा खोला, भवन में प्रवेश किया और प्रशीतन कक्ष के कमरे को बाहर से बन्द कर दिया। इसके बाद उसने

दोनों कमरों में बन्द लड़कियों को इशारा किया और उन्हें सुरक्षित बाहर ले आया । उसकी कार्रवाई को एक क्षण ही हुआ था कि रीछ प्रशीतन कक्ष के रोशनदान को तोड़कर बाहर निकल आया और एक बार फिर भवन में खुला घूमने लगा ।

3. श्री ताशी ताफग्याले भूतिया की बहादुरी तथा समय पर की गई कार्रवाई से 30 कर्मचारियों के जीवन को गम्भीर चोटों तथा संभावित भयंकर आपदा से बचाया जा सका ।

33. श्री मनोज सामन्त,
जखानी गांव,
पटवारी एरिया मेहरखाल,
तहसील व जिला पिथौरागढ़,
उत्तर प्रदेश ।

18-3-1997 को दोपहर 2.30 बजे के लगभग एक नरभक्षी शेर गांव राई जिला पिथौरागढ़ में घुस आया तथा उसने एक ग्रामीण पर हमला कर दिया । अचानक हमले के कारण अन्य ग्रामीण अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे । उसी समय वहां से गुजर रहे श्री मनोज सामन्त मौके पर पहुंचा और उसने शेर के पीछे की ओर से उसके सिर पर डण्डा दे मारा । तब शेर ने मनोज सामन्त पर हमला कर दिया, जोकि उसे पांच मिनट तक लड़ता रहा । श्री सामन्त को गम्भीर चोटें आई । तब तक ग्रामीण शस्त्र लेकर लौट आए और उन्होंने शेर पर हमला करके उसे गांव से बाहर भगा दिया ।

2. श्री मनोज कुमार ने अपने प्राणों की परवाह किए बगैर साहस और सूझ-बूझ से ग्रामीण का जीवन बचाया ।

34. श्री मो० अली,
1 जैड, रोपवेज कालोनी,
डाकखाना मैडमपुर,
पुलिस थाना अण्डल,
प० बंगाल ।

9-4-98 को चार छोटे लड़के संदीप दास, मास्टर परितोष मण्डल, मास्टर जयन्त मण्डल तथा मास्टर शुभदीप दास, पानी में खेलते हुए दामोदर नदी के रेतीले गड्ढे में धंस गए । डूबते लड़कों की चीख पुकार सुनकर श्री शंकर मण्डल एवं श्री जीवन चटर्जी उस स्थान की ओर दौड़े । श्री शंकर मण्डल ने मास्टर जयन्त मण्डल, मास्टर परितोष मण्डल तथा मास्टर संदीप दास को दो बार प्रयास करके अंत में बचा लिया । तब वह निढ़ाल हो चुके थे । श्री जीवन चैटर्जी तैरना नहीं जानने के कारण शुभदीप दास को नहीं बचा सके, तब तक वह डूब रहा था और दूर बहता जा रहा था । मो० अली नदी के किनारे पर बैठा हुआ था । लड़कों की चीख-पुकार सुनकर वह उस ओर दौड़ा तथा अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर मास्टर शुभदीप दास को बचाने के लिए नदी में कूद पड़ा । वह तैरकर नदी पार कांके उस स्थान तक गया जहां शुभदीप बह गया था । कई गोते लगाने के बाद वह मास्टर शुभदीप का पता लगाने में सफल हो गया । तथापि लड़के को बचाने के प्रयास में वह मास्टर शुभदीप सहित नदी तल में धंस गया और उसकी मृत्यु हो गई । मो० अली का शव उसी दिन मैडमपुर में मिला ।

2. स्व० मो० अली ने एक डूबते लड़के का जीवन बचाने का प्रयास करते हुए साहस एवं वीरता दिखाई तथा इस काम में अपने प्राणों की आहुति दी ।

35. हवलदार बिजेन्द्र सिंह,
गांव व डाकखाना कलिंगा,
पुलिस थाना कलानौर,
तहसील व जिला रोहतक, (हरियाणा) ।

4 सितम्बर, 1996 को ऋषिकेश जाते समय "कोदिल्या" जिला टिहरी (उ० प्र०) में भू-स्खलन के कारण हवलदार बिजेन्द्र सिंह, कई सैनिक तथा कुछ परिवार देर रात तक अटके हुए थे ।

2. 23.00 बजे के लगभग उसके एक मित्र की लड़कियां अपनी मां के साथ सड़क के किनारे पर खड़ी थी । अचानक एक तेंदुआ झपटा और सात वर्षीय लड़की को उठाकर सड़क के किनारे की जंगली ढ़लान की ओर उतर गया ।

3. हवलदार बिजेन्द्र सिंह अपने प्राणों को खतरे में डालकर तेंदुए के पीछे ढलान पर कूद गया । ढलान पर लुढ़कते हुए वह तेंदुए तक पहुंच गया तब तक वह लगभग 120 गज तक जा चुका था । लड़की के पिता तथा कुछ सैनिक भी उसके पीछे थे ।

4. हवलदार बिजेन्द्र सिंह अकेला बहादुरी से तेंदुए के साथ लड़ा और उसके बच्चे को तेंदुए के पंजों से बचाया । तेंदुए ने मुड़कर फिर हमला किया और बच्चे के मुंह पर हथेली मार दी । इस पर हवलदार बिजेन्द्र सिंह ने तेंदुए के माथे पर अपनी टार्च से चोट मारी । तब तेंदुआ भाग निकला, लड़की को सड़क पर लाया गया तथा ऋषिकेश हस्पताल पहुंचाया गया ।

5. हवलदार बिजेन्द्र सिंह ने एक बच्चे का जीवन बचाने में वीरता एवं पराक्रम का परिचय दिया ।

36. सवार होशियार सिंह यादव (मरणोपरान्त)
गांव गांधी नगर
डाकघर ध टी ओ० मण्डावर,
जिला अलवर, राजस्थान

4 जुलाई, 1998 को पूर्वाह्न 08.00 बजे 66 आरमर्ड रैजीमैण्ट का सवार होशियार सिंह यादव जो चिकगांव गांधी नगर जिला अलवर में वार्षिक छुट्टी पर आया हुआ था,

उसने गांव के एक सूखे कुएं से सहायता के लिये चिल्लाये जाने की आवाजें सुनी। वह तत्काल वहां पहुंचा तो कुएं के चारों ओर इकट्ठा हुई भीड़ ने बताया कि तीन आदमी एक मरी हुई बकरी को निकालने के लिये कुएं में उतरे थे, वे कुएं में जले हुए टायरों तथा जलती घास से उत्पन्न धुएं एवं जहरीली गैस के कारण कुएं से बाहर नहीं आ पा रहे थे।

2. स्थिति की नाजुकता तथा कुएं में व्यक्तियों की जान को खतरे को भांपते हुए सवार होशियार सिंह, जहरीली गैस से जीवन के खतरे के बावजूद तत्काल एक रस्सी लेकर कुएं में उतर गया। उसने एक व्यक्ति को खोजा जो बेहोश हो चुका था, उसे रस्सी से बांधा और ग्रामीणों ने उसे कुएं से बाहर खींच लिया। जहरीली गैस तथा अपनी जान की खतरे की परवाह किए बगैर सवार होशियार सिंह ने दृढ़ निश्चय से बाकी दो व्यक्तियों की तलाश जारी रखी। तथापि थोड़ी देर बाद उसने स्वयं को गैस से प्रभावित होता महसूस किया और कुएं से बाहर आना शुरु किया। वह आधे रास्ते ही पहुंच पाया था कि गैस से बुरी तरह प्रभावित होकर वह फिर कुएं में गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

3. सवार होशियार सिंह ने अदम्य साहस, एवं पराक्रम का परिचय दिया तथा स्वेच्छा से एक मानवीय कार्य किया तथा साथी लोगों की जान बचाने में अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

37. सैकेंड लेफ्टिनेंट केसू प्रसाद नायर,
24, राजदीप, मोह० मेंडसे कालोनी,
किवाले, तहसील रावेत,
जिला पुणे, महाराष्ट्र।

6 मार्च, 1996 को 14 00 बजे केसू प्रसाद नायर, पश्चिम कमांग जिले (अरुणाचल प्रदेश) के रूपा नामक स्थान से यूनिट में वापस आ रहे थे। बोमडिला तेगारोड पर चुग पुल से थोड़ा पहले उन्होंने सड़क के किनारे कुछ लोगों को एकत्र देखा। उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति एक खड़ी दरार में लता के सहारे 50 फीट नीचे लटका हुआ था और उसके नीचे एक तेज नाला बह रहा था। जबकि वह व्यक्ति सहायता के लिये चीख रहा था लेकिन एकत्र लोग असहाय होकर देख रहे थे।

2. सैकण्ड लेफ्टिनेंट केसू प्रसाद नायर ने एक क्षण भी नहीं गवाया। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की रत्ती भर भी परवाह न करते हुए उन्होंने ड्राईवर से गाड़ी से रस्सी निकालने के लिये कहा जिसमें वह सफर कर रहे थे। उन्होंने रस्सी को नजदीक के खम्भे से बांध दिया और फिसलते हुए उस स्थान पर पहुंचे जहां व्यक्ति लटका हुआ था। उन्होंने रस्सी उस व्यक्ति की कमर में बांध दी और ड्राईवर से उसे खींचने के लिये कहा। जब वह व्यक्ति सुरक्षित पहुंच गया तभी वे रस्सी के सहारे ऊपर आये हालांकि उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि जरा सा फिसलने पर उनकी जान चली जायेगी।

3. सैकण्ड लेफ्टिनेंट केसू प्रसाद नायर ने एक अज्ञात व्यक्ति का जीवन बचाने में सूझबूझ, अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय दिया।

38. लांस नायक मैडेसेरी,
पापाचन विल्सन,
गांव और डाकघर मुकानूर,
जिला एर्नाकुलम, केरल।

लांस नायक मैडेसेरी पापाचन विल्सन केरल के एर्नाकुलम के पास मूकानूर में अपनी छुट्टियां बिता रहे थे। 2 अप्रैल, 1997 की रात्रि हार्डवेयर की एक दुकान में भयंकर आग लग गई। यह दुकान ऐसे बिक्री केन्द्र में स्थित थी जिसमें 12 दुकानें थी। आग से वे पूरी दुकानें जल गई और यह फैलती गई। आग की भयंकरता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि परिसर में अन्य दुकानों को आग से बचाने तथा उस पर काबू पाने के लिये 12 दमकल गाड़ियां भेजनी पड़ी।

2. लांस नायक मैडेसेरी पापाचन विल्सन ने तत्काल स्थिति को संभाला। उन्होंने वहां पहुंच चुके स्थानीय ग्रामीणों पुलिस कर्मियों और अग्निशमन कर्मियों को एकत्र किया तथा बचाव कार्य के सम्बन्ध में निदेश दिया। भयंकर खतरे और तनाव के क्षण में उनका सामयिक हस्तक्षेप और नेतृत्व, सूझबूझ और व्यक्तिगत सुरक्षा की रत्ती पर भी परवाह न करने की भावना के कारण बड़ी संख्या में लोगों का जीवन और उस क्षेत्र की अन्य दुकानों तथा संपत्ति को बचाने में मदद मिली। इस कार्य में लांस नायक मैडेसेरी पापाचन विल्सन बुरी तरह घायल हो गये और उन्हें चिकित्सा के लिये एर्नाकुलम, कोची, केरल के विशेषज्ञ अस्पताल के गहन चिकित्सा यूनिट में भर्ती कराया गया।

3. लांस नायक मैडेसेरी पापाचन विल्सन ने आग से अनेक प्राणों और संपत्ति को बचाने में उद्भुत साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

39. नायब सूबेदार प्रमोद पाधी,
गांव बाड़ा खोली,
डाकघर मेटनोई, जिला आस्का,
उड़ीसा।

20 सितम्बर, 1996 को नायब सूबेदार प्रमोद पाधी गंगटोक के नई छावनी क्षेत्र में पाइप बजाने वाले बैंड का पर्यवेक्षण कर रहे थे। तभी उन्होंने अपनी ओर दौड़कर आते हुए दो लड़कों को देखा जिनके चेहरे पर हवाई उड़ रही थी। लड़कों से पूछताछ करने पर नायब सूबेदार प्रमोद पाधी को ज्ञात हुआ कि उनका एक साथी लाल बहादुर खेलते समय पानी के खुले टैंक में गिर गया था। नायब सूबेदार प्रमोद पाधी को लगा कि एक क्षण की देर भी प्राणलेवा हो सकती है, इसलिये वे तुरन्त पानी के टैंक की ओर दौड़े। शैवाल और पणुनक की मौजूदगी के कारण पानी मैला हो गया था और लड़का दिखाई नहीं पड़ रहा था। लड़के की मौजूदगी का कोई लक्षण नजर नहीं आ रहा था।

2. निडर और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए नायब सूबेदार प्रमोद पाधी टैंक में उतर पड़े। कुछ सेकेंड के बाद वे अचेत बालक के साथ उत्तर आये। नायब सूबेदार प्रमोद पाधी ने अनुकरणीय सूझबूझ का प्रदर्शन करते हुए बच्चे के फेफड़े में एकत्र पानी निकालने के लिये प्राथमिक उपचार किया और श्वसन क्रिया आरम्भ की। तत्पश्चात् उन्होंने बच्चे को अपनी गोद में उठाकर पास खड़ी एक गाड़ी में रखा और उसे गंगटोक स्थित सैनिक अस्पताल के सहायक चिकित्सा यूनिट में भर्ती कराया। वहां उसके जीवन की रक्षा के लिये उपचार किया गया।

3. नायब सूबेदार प्रमोद पाधी ने डूबने से एक बालक का जीवन बचाने में अद्भुत साहस, तत्परता और सूझबूझ का परिचय दिया।

40. नायक रणजीत सिंह,
गांव व डाकखाना नन्दप्रयाग,
जिला चमोली (गढ़वाल),
उत्तर प्रदेश—246419।

41. लांस नायक शांति प्रसाद,
गांव अदेव गुणा,
डाकखाना पुरौला,
जिला उत्तरकाशी,
उत्तर प्रदेश।

गढ़वाल राइफल्स का पर्वतारोहण अभियान दल गढ़वाल क्षेत्र में 23,420 फीट की ऊंचाई पर स्थित चौखम्बा—1 चोटी पर चढ़ने के लिए तैयारी कर रहा था। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यह दल गंगोत्री के निकट गौरी कुण्ड नामक स्थान पर प्राथमिक प्रशिक्षण एवं तैयारी कर रहा था। 19 अगस्त, 1996 को निकट के गांव से एक नागरिक कैम्प स्थल पर दौड़ता हुआ आया और उसने नायक रणजीत सिंह को बताया कि एक फ्रैंच महिला (जो बाद में श्रीमती शिर्ले मार्कीस के रूप में पहचानी गई) वहां का नजारा देखते समय भागीरथी नदी (गंगा) के 60 फीट ऊपर सीधे खड़े किनारे से नीचे घाटी में गिर गई है। किसी भी आदेश की प्रतीक्षा किए बगैर रणजीत सिंह तत्काल लांस नायक शांति प्रसाद को साथ लेकर दुर्घटना स्थल की ओर दौड़ा।

2. दुर्घटना स्थल पर पहुंचने पर नायक रणजीत सिंह ने पाया कि महिला घाटी में नीचे गिरी हुई थी और बड़े गोल पत्थर पर पड़ी थी। उसने तत्काल अपने को रस्सियों से बांधा और घाटी में नीचे उतर गया। बड़ी कठिनाई से वह उस स्थान तक पहुंचा जहां महिला बेहोश पड़ी थी। नायक रणजीत सिंह तथा लांस नायक शांति प्रसाद ने महिला को बड़े ध्यानपूर्वक तथा सावधानी से बारी-बारी अपनी पीठ पर उठाया ताकि उसे और चोट न लगे तथा धीरे-धीरे खड़ी ढलान पर ऊपर चढ़ने लगे। प्रत्येक कदम के साथ चढ़ाई बड़ी कठिन हो गई थी परन्तु दोनों जवानों ने अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह किए बगैर दृढ़ निश्चय से तंग घाटी के तीखे नुकीले पत्थरों तथा ऊपर से गिरते पत्थरों से बचते हुए आगे बढ़ना जारी रखा। बेहोश महिला को उठाए रखने में तथा सीधी ढलान पर बुद्धिमता से चढ़ने में उन्होंने एक-दूसरे की सहायता की तथा जब ऊपर पहुंचे तो वे निढाल हो चुके थे। दृढ़ इच्छा-शक्ति एवं धैर्य से उन्होंने असहाय महिला को मौत से बचाया।

3. नायक रणजीत सिंह और लांस नायक शांति प्रसाद ने महिला की जान बचाने में अनुकरणीय जीवट के लिए महत्वपूर्ण तथा निःस्वार्थ कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

42. लांस नायक शरद किटूकाले,
गांव फुलाम्बा,
डाक : कुरखा,
जिला : अमरावती,
महाराष्ट्र।

दिनांक 25 मार्च, 1997 को लांस नायक शरद किटूकाले गांव कारोली, राजस्थान के पास उनकी कंपनी द्वारा बनाये गये हैलिपैड के समीप पिकेट गार्ड ड्यूटी पर थे। लगभग 2100 बजे उन्होंने पास की झोंपड़ी की छत से आग की लपटें उठती देखी। उन्होंने तुरन्त अन्य लोगों को जगाया और गार्ड कमांडर से अनुमति लेकर घटनास्थल की ओर दौड़े। वहां पहुंचने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। उन्होंने देखा कि झोंपड़ी के बाहर एक महिला चिल्ला रही है क्योंकि उसके दो बच्चे जलती झोंपड़ी के अन्दर थे। वे तुरन्त ही अपनी जान की परवाह किये बिना अंदर गये और बच्चों को बाहर निकाल लाये। बच्चों को बाहर निकालने के आधा मिनट बाद ही झोंपड़ी पूर्णत: टूटकर नीचे गिर पड़ी। लांस नायक शरद किटूकाले की इस समयोचित और तत्वरित कार्रवाई से दो बच्चों की जान बच गई जिनमें से एक की आयु एक वर्ष से भी कम थी।

2. लांस नायक शरद किटूकाले ने दो बच्चों का जीवन बचाने में साहस और सूझबूझ का परिचय दिया।

43. सी० एफ० एन०/सी० एम० (ए० एफ० वो०) (मरणोपरांत)
श्याम बिहारी उपाध्याय,
गांव डिलिया,
डाक मधानपुर,
तह० जगदीशपुर,
जिला भोजपुर,
बिहार।

10 मई, 1996 को एल० आर० डब्ल्यू० मुख्यालय स्क्वा० 43 आर्म्ड ब्रिगेड के सी० एफ० एन० श्याम बिहारी उपाध्याय, उसी यूनिट के एक जे० सी० ओ० की मृतक पुत्री के दाहसंस्कार के उपरांत होने वाले अनुष्ठान संबंधी कार्यों में मदद करने के लिए तैनात किए गये थे।

2. सी० एफ० एन० श्याम बिहारी उपाध्याय मृतक की राख को विसर्जित करने के लिए जे० सी० ओ० के साथ भाखरा नहर गये थे । ऐसा करते समय जे० सी० ओ० अचानक फिसलकर नहर में गिर पड़े । जे० सी० ओ० को बचाने के लिए उनकी पत्नी भी नहर में कूद पड़ी और पानी की तेज धारा दोनों को बहा ले गयी ।

3. सी० एफ० एन० श्याम बिहारी उपाध्याय, अपने जीवन को उत्पन्न होने वाले अत्यधिक गंभीर खतरे की चिन्ता न करते हुए जे० सी० ओ० और उनकी पत्नी को बचाने के लिए अपनी काम्बेट पोशाक में ही नहर के भंवरदार पानी में तत्काल कूद पड़े । जब तक उन्होंने जे० सी० ओ० की पत्नी को नहीं बचा लिया तब तक वे पानी की भंवरदार लहरों से काफी समय तक लड़ते रहे । घोर प्रयासों और थकान से चूर सी० एफ० एन० श्याम बिहारी उपाध्याय अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए पुनः जे० सी० ओ० को बचाने का प्रयास करने लगे । यद्यपि वे बुरी तरह थक गये थे परन्तु उन्होंने जे० सी० ओ० को बचाना जारी रखा और अंततोगत्वा उन्हें सुरक्षित बचा लिया । तब तक भाखरा नहर के प्रचंड और भंवरदार पानी से लड़ने के कारण सी० एफ० एन० श्याम बिहारी उपाध्याय पूरी तरह से थककर चूर हो गए और भंवर में फंस कर डूब गए ।

4. सी० एफ० एन० श्याम बिहारी उपाध्याय ने एक व्यक्ति और उसकी पत्नी का जीवन बचाने में अपने जीवन का सर्वोच्च और अंतिम बलिदान दिया ।

44. मास्टर अनुराग,
ई–302, गली सं० 6,
सुभाष विहार, भजनपुरा,
दिल्ली ।

45. मास्टर मो० आतिफ,
बी–4/141, यमुना विहार,
दिल्ली ।

46. कुमारी शिवानी शर्मा,
सी–407/एच, गली सं० 25,
भजनपुरा,
दिल्ली ।

दिनांक 18–11–1997 को कुमारी शिवानी शर्मा और उसका छोटा भाई जतिन स्कूल जाने के लिए सुबह बस में चढ़े । मोहम्मद आतिफ और अनुराग क्षमता से ज्यादा भरी बस में पहले से ही अन्दर थे । यमुना नदी पर बने वजीराबाद पुल को पार करते समय तेज गति वाली यह बस पलट गई और पुल पर बनी लोहे की रेलिंग तोड़कर नदी में जा गिरी । देखते ही देखते बस में पानी भर गया । सीटों के मध्य में फंसे छात्रों ने बस से बाहर आने के लिए हताशपूर्ण प्रयास किए । अत्यधिक प्रयासों से शिवानी, आतिफ और अनुराग ने किसी तरह खिड़की के पास पहुंचकर खिड़की के शीशे तोड़े । तत्पश्चात् उन्होंने खिड़की से कुछ छात्रों को बाहर खींचा और इसकी चोटी पर सुरक्षित पहुंचने में उनकी मदद की । वहां से मछली पकड़ने वाले और अन्य लोगों ने नावों में बच्चों को सुरक्षित बचाया ।

2. मास्टर अनुराग, मो० आतिफ और कुमारी शिवानी शर्मा ने अनेक विद्यार्थियों को नदी में डूबने से बचाने में अपने साहस, अपनी तत्परता और सूझबूझ का परिचय दिया ।

47. मास्टर संकेत सुरेन्द्र सालवी,
डी/17–138, एम०आई०जी० कालोनी,
गांधी नगर, बांद्रा (पूर्व),
मुम्बई (महाराष्ट्र) ।

02–02–1998 को करीब 7.30 बजे सायं, कुछ बच्चे पटनाकर नगर कालोनी के एक भवन के परिसर में खेल रहे थे । अचानक एक आवारा कुत्ता एक बच्चे पर झपटा और उसके दाहिने बाजू में काट लिया । मास्टर संकेत जो पास ही अपने दोस्तों के साथ खड़ा था, उसकी सहायता के लिए आगे बढ़ा । तथापि, कुत्ता वहां से भाग गया और कुछ दूरी पर खड़ी पांच वर्षीय अदिती श्याम की तरफ बढ़ा । कुत्ते ने उसकी नाक को अपने जबड़े के बीच मजबूती से पकड़ लिया और उसका गला पकड़ने ही वाला था । किंकर्तव्यविमूढ़ छोटी लड़की चिल्लाई । शोर सुन अन्य आवारा कुत्ते इकट्ठे हो गए, और जल्द ही अदिती को सात-आठ कुत्तों ने घेर लिया । खतरे को भांपते हुए, मास्टर संकेत अपनी जान की परवाह न करते हुए अदिती की तरफ दौड़े । उसने अपने दोनों हाथों से कुत्ते के जबड़े को कस कर पकड़ा और कुत्ते को लड़की के पास से दूर फेंक दिया । मास्टर संकेत ने अदिती को, जिसके खून बह रहा था, उठा लिया और अन्य कुत्तों को खदेड़ दिया । अदिती को अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी प्लास्टिक सर्जरी की गई ।

2. मास्टर संकेत सुरेन्द्र सालवी ने कुत्ते के आक्रमण से एक बच्ची का जीवन बचाने में साहस, अपनी तत्परता तथा सूझबूझ का परिचय दिया ।

48. मास्टर सुदेश कुमार सोंधी,
ग्राम बाबूपुरा,
तहसील सागर, जिला सागर,
मध्य प्रदेश ।

05–02–98 को करीब 8.30 बजे रात्रि को एक ट्रैक्टर ट्राली और उसपर भिरोजा पुल पर टकरा गए । इसके परिणामस्वरूप, कई बच्चों को ले जा रही ट्राली जिसमें मास्टर सुदेश सोंधी और कुमारी करुणा दूबे भी थीं, कुछ दूरी पर एक नाले में जा गिरी । हालांकि मास्टर सुदेश सोंधी को पैर और कान पर चोट लगी, लेकिन वह अन्य बच्चों

को बचाने के लिए आगे बढ़ा। कुछ प्रयत्न करने के बाद, उसने नाले में कमल, कल्पना और नीलिमा को बाहर निकाला।

2. मास्टर सुदेश कुमार सोंधी ने नाले में डूबने से अनेक बच्चों की जान बचाने में साहस, अपनी तत्परता और सूझबूझ का परिचय दिया।

अरुण मित्रा, राष्ट्रपति का उप सचिव

लोक सभा सचिवालय

(कृषि संबंधी स्थायी समिति)

नई दिल्ली-110001, दिनांक 24 मार्च 1999

सं० 6/1/2/ए०सी०/99—माननीय लोक सभा अध्यक्ष ने श्री सी० सुरेश रेड्डी, संसद सदस्य, लोक सभा को 18 मार्च, 1999 से लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) एन० फोली के स्थान पर विभागों से संबद्ध कृषि संबंधी स्थायी समिति का सदस्य मनोनीत किया है।

एस० बाल शेखर, उप सचिव

इस्पात और खान मंत्रालय

(इस्पात विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 30 मार्च 1999

संकल्प

सं० ई०-11015(4)/96-हिन्दी—इस्पात और खान मंत्रालय (इस्पात विभाग), भारत सरकार ने इस्पात विभाग की हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन करने का निश्चय किया है। पुनर्गठित समिति का गठन, कार्य आदि इस प्रकार होंगे :—

गठन

1. इस्पात मंत्री और खान मंत्री — अध्यक्ष
2. इस्पात और खान राज्य मंत्री — उपाध्यक्ष

गैर-सरकारी सदस्य

3. डा० (श्रीमती) प्रभा ठाकुर, संसद सदस्य (लोक सभा), 44, मीना बाग, नई दिल्ली। — सदस्य
4. श्रीमती कृष्णा बोस, संसद सदस्य (लोक सभा), 72, नार्थ एवेन्यू, नई दिल्ली-110001। — सदस्य
5. श्री सोहन पोटाई, संसद सदस्य (लोक सभा), नई दिल्ली। — सदस्य
6. श्री बालासाहेब विखे पाटिल, संसद सदस्य (लोक सभा) नई दिल्ली। — सदस्य
7. श्री सनातन बिसि, संसद सदस्य (राज्य सभा) नई दिल्ली। — सदस्य
8. श्री देवी प्रसाद सिंह, संसद सदस्य (राज्य सभा), नई दिल्ली। — सदस्य
9. श्री हरीबाबू कंसल, ई-9/23, वसंत विहार, नई दिल्ली-1100057। — सदस्य
10. श्री विभूति मिश्र, 148, बारा गंज, इलाहाबाद-211006। — सदस्य
11. श्री रमेश नैयर, समता कालोनी, रायपुर-492001। — सदस्य
12. डा० केशरी लाल वर्मा, गंगा राम नगर, 2/1072, रामकुंड, रायपुर (म० प्र०)-492001। — सदस्य
13. डा० एच० एल० बाछोतिया, के-40, एफ, साकेत, नई दिल्ली-110017। — सदस्य
14. डा० विष्णु सिंह ठाकुर, ओम सोसायटी, सुन्दर नगर, रायपुर (म० प्र०)-492013। — सदस्य
15. श्री रामनाथ शुक्ल, 238/172, एलनगंज, इलाहाबाद-211002। — सदस्य
16. डा० शंकर लाल पुरोहित, डी-35, बी०जे०बी० फ्लैट्स, भुवनेश्वर-751014। — सदस्य
17. श्री एस० एम० रामचन्द स्वामी, शारदा विहार, 89/02, अंजनेय टैम्पल स्ट्रीट, बसवानगुडी, बैंगलूर-560004। — सदस्य

सरकारी-सदस्य

18. सचिव (इस्पात) इस्पात विभाग — सदस्य
19. अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार इस्पात विभाग — सदस्य
20. सचिव, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) — सदस्य
21. राजभाषा विभाग का एक अन्य प्रतिनिधि — सदस्य

22.	विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात, कलकत्ता ।	सदस्य
23.	अध्यक्ष, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि०, नई दिल्ली ।	सदस्य
24.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, नेशनल मिनरल डेवलेपमेंट कार्प० लि०, हैदराबाद ।	सदस्य
25.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मेटलर्जिकल एवं इंजीनियरिंग कंसलटेंट् (इंडिया) लि०, रांची ।	
26.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, भारत रिफ्रैक्ट्रीज लि०, बोकारो स्टील सिटी, बोकारो (बिहार) ।	सदस्य
27.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, मैंगनीज ओर (इंडिया) लि०, नागपुर ।	सदस्य
28.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, कुद्रेमुख आयरन ओर कंपनी लि०, बंगलौर ।	सदस्य
29.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, राष्ट्रीय इस्पात निगम लि०; (विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र), विशाखापट्टणम ।	सदस्य
30.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एम०एस०टी०सी० लिमिटेड, कलकत्ता ।	सदस्य
31.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कंस्ट्रक्शन लि०, कलकत्ता ।	सदस्य
32.	अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, स्पंज आयरन इंडिया लि०, हैदर ब।	सदस्य
33.	प्रबन्ध निदेशक, फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड, भिलाई ।	सदस्य
34.	संयुक्त सचिव (राजभाषा के प्रभारी) इस्पात विभाग ।	सदस्य-सचिव

II. कार्य

इस समिति का कार्य संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम व नियम के उपबन्धों, केन्द्रीय हिन्दी समिति के निर्णयों तथा गृह मंत्रालय (राजभाषा विभाग) द्वारा जारी किए गए निदेशों, अनुदेशों के कार्यान्वयन और विभाग के कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के बारे में सलाह देना होगा।

III. कार्य अवधि

समिति का कार्यकाल सामान्यतः 3 वर्ष होगा। समिति के कार्य-काल की अवधि में यदि किसी व्यक्ति को समिति का सदस्य नामित किया जाता है तो वह उस समिति के कार्यकाल की शेष अवधि के लिए सदस्य होगा। विशेष परिस्थितियों में समिति का कार्यकाल विभाग द्वारा कम या ज्यादा किया जा सकता है।

यात्रा भत्ता एवं अन्य भत्ते

समिति की बैठकों में भाग लेने के लिए गैर-सरकारी सदस्यों को राजभाषा विभाग के दिनांक 22 जनवरी, 1987 के कार्यालय ज्ञापन सं० 11/20034/4/86-रा०भा० (क-2) में निहित दिशा-निदेशों के अनुरूप और भारत सरकार द्वारा समय-समय पर यथा-संशोधित दरों एवं नियमों के अनुसार यात्रा भत्ता और दैनिक भत्ता दिया जाएगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति सभी राज्य सरकारों और संघ राज्य प्रशासनों, प्रधानमंत्री का कार्यालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, लोकसभा सचिवालय, राज्यसभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व और भारत सरकार के सभी मंत्रालयों तथा विभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को सर्वसाधारण की जानकारी के लिए भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

नरेश नारद,
संयुक्त सचिव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(संस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 30 मार्च 1999

संकल्प

सं० ए० 24-17/97-एम० 1—कला, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली की सोसायटी के नियम 4 के अनुसरण में, राष्ट्रपति जी, कला, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान की सोसायटी को इस संकल्प के जारी होने

की तारीख से तीन वर्षों की अवधि के लिए अथवा सोसायटी के पुनर्गठित होने तक, जो भी पहले हो, सहर्ष पुनर्गठित करते हैं ।

कला संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के सोसायटी की संरचना

1.	मानव संसाधन विकास मंत्री	अध्यक्ष
2.	डा० आर० डी० चौधरी, महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय	उपाध्यक्ष (पदेन)
3.	डा० एम० एन० देशपांडे, डी–25, प्रैस एन्कलेव, साकेत, नई दिल्ली ।	सदस्य
4.	डा० कृष्ण देव, सी/121, डी० डी० ए० फ्लैट, साकेत, नई दिल्ली ।	सदस्य
5.	डा० एम० पी० गुप्ता, बी–17, कुतुब औद्योगिक क्षेत्र, दक्षिण भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली ।	सदस्य
6.	डा० ज्योतिन्द्र जैन, निदेशक, शिल्प संग्रहालय, भैरों रोड़, नई दिल्ली ।	सदस्य
7.	प्रो० महेश्वरी प्रसाद, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विज्ञान विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ।	सदस्य
8.	प्रो० के० वी० रमण, 34, 5वां क्रास रोड़, मंडावलीपक्कम, चेन्नई––600024 ।	सदस्य
9.	प्रो० ए० सुन्दारा, 115, गिरी निवास, के० एच० बी० कालोनी, शोलापुर रोड़, बीजापुर, कर्नाटक––586103 ।	सदस्य
10.	संसदीय कार्य मंत्रालय से क्लीयरेंस मिलने के बाद संसद सदस्य को नामित किया जाएगा ।	सदस्य
11.	सुश्री सरयू दोशी, निदेशक, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, मुम्बई ।	सदस्य
12.	सुश्री लैला त्यावजी, 45–बी, शाहपुर जट, एशियाई खेल गांव के निकट, नई दिल्ली––110049	सदस्य
13.	संयुक्त सचिव, सोसायटी संबंधी मामलों से संबंधित संस्कृति विभाग ।	पदेन सदस्य
14.	संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार संस्कृति विभाग ।	पदेन सदस्य
15.	सचिव, शिक्षा विभाग, भारत सरकार ।	पदेन सदस्य
16.	सचिव, व्यय विभाग ।	पदेन सदस्य
17.	उपाध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ।	पदेन सदस्य
18.	महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ।	पदेन सदस्य
19.	निदेशक, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण ।	पदेन सदस्य
20.	महानिदेशक भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार ।	पदेन सदस्य
21.	निदेशक, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, मुम्बई ।	पदेन सदस्य
22.	निदेशक, राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा, संरक्षण अनुसंधान शाला, लखनऊ ।	पदेन सदस्य
23.	प्रो० ए० के० दास, (प्रो० संग्रहालय विज्ञान इतिहास), कला, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली ।	सदस्य
24.	डा० आई० के० भटनागर, संकायाध्यक्ष (प्रो० संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान) कला, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली ।	सदस्य
25.	रजिस्ट्रार, कला, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान इतिहास का राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली ।	गैर-सदस्य सचिव

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति संस्कृति विभाग के सभी कार्यालयों, अनुभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में सामान्य सूचना के लिए प्रकाशित किया जाय।

कस्तूरी गुप्ता मेनन
संयुक्त सचिव

विद्युत मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 23 मार्च, 1999

सं० 6/2/97—ट्रांसमिशन। विद्युत मंत्रालय के 4 अगस्त, 1997 को जारी समसंख्यक संकल्प के आंशिक आशोधन के रूप में निम्नलिखित संशोधन किए जाते हैं :—

(क) अध्यक्ष डी० वी० बी० को एन०आर० ई० बी० के सदस्य के रूप में शामिल किया जाता है और वे चक्रानुक्रम से अध्यक्ष एन० आर० ई० बी० के रूप में नियुक्ति के पात्र होंगे।

(ख) अध्यक्ष, हरियाणा राज्य विद्युत बोर्ड के स्थान पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हरियाणा विद्युत प्रसारण निगम को सदस्य, एन० आर० ई० बी० के रूप में नियुक्त किया जाता है।

अन्य संबंधित सदस्य यथावत रहेंगे।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि उपरोक्त संकल्प को पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली की राज्य सरकारों, चण्डीगढ़ के संघ क्षेत्र प्रशासन, भाखड़ा प्रबंध बोर्ड, पावरग्रिड कार्पोरेशन लिमिटेड, उत्तरी क्षेत्र, एन०टी०पी० सी०, एन० एच० पी० सी०, केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, भारत सरकार के सभी मंत्रालयों, प्रधानमंत्री कार्यालय, राष्ट्रपति के सचिव, योजना आयोग और भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक को प्रेषित किया जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम सूचना हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

अनिल राजदान,
संयुक्त सचिव

श्रम मंत्रालय

नई दिल्ली–110001, दिनांक 23 मार्च 1999

संकल्प

सं० ई० 11016/8/96 रा० भा० नी० श्रम मंत्रालय के समय समय पर यथासंशोधन संकल्प संख्या ई० 11096/24/93 रा० भा० नी० दिनांक 10–12–1993 का अधिक्रमण करते हुए भारत सरकार ने श्रम मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति का निम्न प्रकार से पुनर्गठन करने का निर्णय किया है।

गठन

केन्द्रीय श्रम मंत्री	अध्यक्ष
सरकारी सदस्य	
1. सचिव, श्रम मंत्रालय	सदस्य
2. अपर सचिव, श्रम मंत्रालय	सदस्य
3. सचिव, राजभाषा विभाग और भारत सरकार के हिंदी सलाहकार	सदस्य
4. संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग	सदस्य
5. महानिदेशक, श्रम कल्याण, श्रम मंत्रालय	सदस्य
6. महानिदेशक, रोजगार एवं प्रशिक्षण महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय	सदस्य
7. मुख्य श्रमायुक्त केन्द्रीय श्रम मंत्रालय	सदस्य
8. महानिदेशक, कारखाना सलाह सेवा एवं श्रम संस्थान, महानिदेशालय, मुम्बई	सदस्य
9. महानिदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली	सदस्य
10. महानिदेशक, खान सुरक्षा महानिदेशालय, धनबाद	सदस्य
11. केन्द्रीय भविष्य निधि आयुक्त, नई दिल्ली	सदस्य

12.	महानिदेशक, श्रम ब्यूरो, शिमला	सदस्य	
13.	निदेशक, केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, नागपुर	सदस्य	
14.	श्रम और रोजगार सलाहकार/ संयुक्त सचिव, श्रम मंत्रालय	सदस्य–सचिव	
	गैर–सरकारी सदस्य		
15.	श्री अनन्त कुमार हेगड़े संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य	
16.	श्रीमती ओमवती संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य	संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नामित
17.	श्री हिफेई संसद सदस्य (राज्य सभा)	सदस्य	
18.	श्री दारा सिंह चौहान संसद सदस्य (राज्य सभा)	सदस्य	
19.	श्री प्रफुल्ल पटेल संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा नामित
20.	श्री सोमजी भाई दामोर संसद सदस्य (लोक सभा)	सदस्य	
21.	श्री रमेश गुप्ता चातक	सदस्य	श्रम मंत्रालय द्वारा नामित
22.	श्री नन्द किशोर शर्मा	सदस्य	
23.	श्री रासा सिंह रावत	सदस्य	
24.	श्री शैलेन्द्र पराशर	सदस्य	
25.	डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर	सदस्य प्रतिनिधि भारतीय दलित साहित्य अकादमी दिल्ली	
26.	श्री कृष्ण कुमार ग्रोवर, केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, सरोजनी नगर, नई दिल्ली-110023	सदस्य	प्रतिनिधि केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद
27.	डॉ० वी० कृष्णा बी 25, केन्द्रीय विश्वविद्यालय परिसर, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद–500046	सदस्य	राजभाषा विभाग
28.	डॉ० एम० शेषन, प्लाट नम्बर 790, डॉ० रामास्वामी मुदलियार रोड़ के०के० नगर, चेन्नई-600078	सदस्य	द्वारा नामित
29.	डॉ० एन० चन्द्रशेखरन नायर श्री निकेतन, लक्ष्मी नगर, पट्टम पालम, पोस्ट तिरुवनन्तपुरम–695004	सदस्य	

2. इस समिति का कार्य सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित मामलों में श्रम मंत्रालय और उसके सम्बद्ध / अधीनस्थ कार्यालयों को सलाह देना होगा ।

3. समिति का कार्यकाल उसके गठित किए जाने की तारीख से तीन वर्ष तक होगा । संसद सदस्य, जो इस समिति के सदस्य हैं, संसद भंग होने पर या उनका कार्यकाल समाप्त होने पर या अन्यथा सदन के सदस्य न रहने पर, समिति के सदस्य नहीं रहेंगे ।

4. समिति का मुख्यालय, नई दिल्ली में होगा ।

5. यह समिति उच्च स्तरीय होगी तथा गैर–सरकारी सदस्यों को समिति की बैठकों में भाग लेने के लिए भारत सरकार द्वारा समय–समय पर निश्चित दरों पर यात्रा तथा दैनिक भत्ते दिए जाएंगे ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस प्रस्ताव की एक–एक प्रति राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों, प्रधानमंत्री सचिवालय, मंत्रिमंडल सचिवालय, संसदीय कार्य मंत्रालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय, भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व तथा भारत सरकार के सभी मंत्रालय तथा विभागों एवं श्रम मंत्रालय के सभी कार्यालयों जिनमें स्वायत्त तथा अर्द्ध स्वायत्त निकाय भी शामिल हैं, को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी के लिए भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

आर० के० सैनी, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 31st March 1999

No. 59-Pres/99. The President is pleased to approved the award of "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" to :

SS-36327 Lt. Rajesh Pattu,
E-486 Mayur Vihar, Phase-II,
New Delhi-91.

Lieutenant Rajesh Pattu and another officer alongwith his family were among the many people trapped in the Uphar Cinema on 13 June 1997, the day a major fire broke out in the Cinema during the matinee show.

2. Caught between panickly people, smoke and darkness, Lieutenant Rajesh Pattu acted with efficiency and promptness. He was able to calm down the ever increasing number of people in a ladies toilet, the lone place with comparatively less contamination.

3. Using foresight and courage to leave the relative safety of the toilet, Lieutenant Rajesh Pattu scrambled out and found an escape route for himself. Setting aside personal safety, he flung himself to a drain pipe at a distance of six feet from the window on the fourth floor and slithered down.

4. The officer climbed to fourth floor with the help of a hydraulic lift and forced open the ladies toilet and pulled 15—20 persons/bodies out and sent them for immediate medical help. Similarly, he organised rescue work at second and third floors.

5. Persuasive, aggressive and with extreme dexterity he was able to rescue people from the second, third and fourth floors. His ingenuity, and leadership skills were there for all to see as he was able to assist and organise a major rescue operation

6. Lieutenant Rajesh Pattu showed conspicuous courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of many persons in a major fire rescue operation with scant regard to his personal safety.

BARUN MITRA
Dy. Secy. to the President

No. 60-Pres/99.—The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Nagaraj Mahadevappa Sankannavar,
S/o Mahadevappa Sankannavar,
Hugar Galli,
Near Shoba Talkies Byadgi,
Haveri District,
Karnataka.

On 27-11-97, due to heavy downpour in Harehalla area on Halegari Itagi Road, water was flowing on a culvert. One of the two K.S.R.T.C. buses while returning from a marriage party was caught in the swirling water due to negligence of the driver. The flash floods swept away the bus, resulting in the death of 34 persons out of 50 (13 male, 14 female and 7 children) while the remaining 16 persons were struggling for their lives.

2. At that time, one Shri Nagaraj, who was coming in a Tempo from Itagi to Halageri, noticed the ghastly incident. Immediately he got down from the Tempo and collected a rope from a lorry parked nearby. He tied the rope to a guard stone and tied the other end to his waist and jumped into the water without caring for his own life. He swam nearer to the bus and tied the rope to the wheel of the bus so that the bus did not move away further. He climbed into the bus, removed the persons caught inside the bus through window, and put them on the top of the bus and thereby rescued the lives of 16 persons (7 female, 5 male and 4 children).

3. Shri Nagaraj Mahadevappa Sankannavar showed courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of 16 persons at a risk to his own life.

2. Shri B. G. Fania alias
Shri Lalbinia,
Bukpui, Mizoram.

On 28.08.1998, Shri Zomuana, Shri Lalbinia and three others were about to cross the Manipuilui river for attending to their work when a wild bear charged towards them and attacked Shri Zomuana. Immediately, Shri Lalbinia jumped to his feet and picked up his knife and stabbed the bear on his spine. The bear then attacked Shri Lalbinia. While the bear was still biting his calf, Shri Lalbinia with his right leg gave a severe kick on the head of the bear. The bear left Shri Lalbinia and again attacked Shri Zomuana who got frightened and panic stricken, fell unconscious. Taking advantage of the situation, the bear attacked him and started piercing his eyelids and in the process broke the jaws of Shri Zomuana.

2. Shri Lalbinia, realising the fatality of the attack launched by the bear on Shri Zomuana, spared no time and pounched by the bear and started stabbing on the left eye of the bear. The killer bear could not tolerate the heavy attack inflicted upon him and scrambled away for safety leaving Shri Zomuana.

3. Shri Lalbinia showed courage, promptitude and presence of mind in saving the life of a person from the attack of a wild bear at a great risk to his own life.

3. Shri Rabindra Biswal, (Posthumous)
Artal, P. O. Tirtol,
Distt. Jagatsinghpur,
Orissa.

On 19-8-97, due to continuous rain, the water level of river Hati near Junagarh of Kalahandi district had risen upto 8 ft. on the bridge of Bhawanipatna-Jeypur State Highway. On 21-8-97 morning when the flood water decreased to some extent, few vehicles and persons passed over the bridge. Five persons of Dharamgarh area also tried to cross the bridge. While crossing the bridge, they moved down stream but they were able to reach the higher level in the middle portion of the bridge. The remaining portion of bridge was under water. They waited for water level to decrease further. But on the same day, at about 3.30 P.M., suddenly the flood water increased and these five persons were stranded. Even though the Fire brigade personnel were present at the spot, they were unable to take up rescue operation due to non availability of necessary equipment. On seeing this, Shri Rabindra Biswal alongwith four other persons of Junagarh jumped into the river to rescue five persons from drowning. However, he could rescue three persons only. While trying to save the other two persons, he himself was drowned in the river and his dead body was recovered on 23-8-97. The remaining two persons were rescued by the District Administrative personnel with the help of a boat

2. Shri Rabindra Biswal showed courage and promptitude in saving the lives of three persons and made the supreme sacrifice in the process of saving the lives of two other persons.

4. Havildar Ratan Singh (Retd.),
Bharaiyan-Di Dhar,
Mauze Lagwalti,
Teh. & Distt. Hamirpur,
Himachal Pradesh.

On 29-3-1997, Smt. Veena Devi of Tehsil & Distt. Hamirpur was going to her in-laws. On the way, one leopard attacked her and she started screaming. On hearing her cries, Shri Ratan Singh reached the place of the incident and saved the life of the woman from the leopard's attack. The leopard then attacked Shri Ratan Singh and he lost his right arm in the process.

2. Shri Ratan Singh saved the life of a woman in a leopard attack at a great risk to his own life.

5. Shri Manoj Kumar Singh. (Posthumous)
Udai Village, P. O. Dubey Chapra,
Distt. - Balia,
Uttar Pradesh,

On 14-6-1997, around, 8 am, Shri Manoj Kumar Singh alongwith his five friends went to the river Ganga, at a distance of about 1 km from their village, to have a bath. Suddenly, three children, who were also taking bath, started drowning. Shri Manoj Kumar Singh heard the cries of the children and saw them drowning. While no one else dared to come forward to rescue the children, Shri Manoj Kumar Singh jumped into the river without caring for the risk to his own life. After lot of efforts, Shri Manoj Kumar Singh was able to bring the children on the bank of the river but in the process he was drowned and lost his life.

2. Shri Manoj Kumar Singh showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of three children from drowning and made the supreme sacrifice of his own life in the process.

6. 22350 (MED) Flt. Lt.
Shamsher Singh Dalal,
Vill. & P.O. Chara,
Distt. Rohtak, Haryana.

2. Realising the graveness of the situation Flt. Ltd. Dalal a serious patient from Jang (90 Road construction company) to Tenga (715 Medical Staging Section) in Arunachal Pradesh. Enroute to Tenga, near mile stone 169 on Balipura-Tawang road, Flt. Lt. Dalal encountered an agitated crowd of 15—20 people. On inquiring it was revealed that a civil passenger bus had fallen into the gorge below about ten minutes back. The gorge was over 200 feet deep, very steep and leading to a fast flowing river.

2. Realising the graveness of the situation Flt. Lt. Dalal decided to commence rescue efforts on his own without wasting time waiting for organised help. He began a very difficult trek down the steep hill side, through dense bush, risking his own life to reach the site of accident. The bus was badly damaged, fallen in a dangerous position with the rear portion submerged in the river. Many passengers of the ill fated bus had been thrown out on impact and some were trapped inside. It was a gruesome sight filled with painful moaning sounds. Flt. Lt. Dalal started to examine the passengers single handedly to assess their condition. Five passengers had died on the spot and the rest, about twenty five were seriously injured.

3. Flt. Lt. Dalal made a plan of action. He tracked up the slope and motivated the gathered people to help him in evacuating casualities. One villager was sent to inform the Primary Health Centre, Driang, the nearest hospital, to be ready to receive the casualities. Himself, he took the first aid kit available in his ambulance to the accident site with the help of other villagers. He first removed the children and seriously injured, unconscious passengers, taking care that no further injury was caused. The bus was lifted up using cross bars to remove the passengers lying crushed under the bus. He cleared the mouth and upper airway of passengers lying unconscious due to head injuries and bleeding from mouth and nose, thus restoring their breathing. Two of the passengers had multiple rib fracture with flail chest and were cyanosed due to impaired breathing. Flt. Lt. S. Dalal fixed the flail segments and gave mouth to mouth respiration. Their condition improved after sometime. He cleared and sutured the actively bleeding wounds and applied compression bandages to stop further blood loss. Casualities with excessive blood loss were resuscitated with intravenous fluids and head low position. He splinted the fractured limb bones using local wooden sticks to prevent further damage while transferring the casualities to the hospital. Thus using his expertise he saved some very precious lives (about 25) which would have been lost due to delay/improper handling of the casualities. The casualities were brought to the road using rope and by making a chain of the local people. He then transferred the casualities to Primary Health Centre, Dirang using a civil truck and his one ton vehicle. At the Primary Health Centre, he continued assisting the medical staff to administer the requisite life saving treatment. Once the situation was under control Flt. Lt. S. S. Dalal left PHC to pick up his patient, whom he had left at Munna Camp and referred to 715 MSS at Tenga.

4. Flt. Lt. S. S. Dalal not only used his medical expertise in saving nearly 25 human lives in a very grave situation but also displayed initiative and courage of an exceptional order as he worked several hours in very difficult conditions and with total disregard to his own life to save injured passengers.

7. L/Naik Kyam Bahadur Rai, (Posthumous)
Vill. Ghoom Sukhia Road,
P.O. Ghoom, Distt. Darjeeling,
West Bengal-734 102.

On 30 March, 1996, Lance Naik Kyam Bahadur Rai of 3/11 Gorkha Rifles was travelling by Mahananda Express alongwith his wife and two minor children. When the train reached approximately 45 km east of Patna, four dacoits armed with firearms entered the compartment and started looting passengers. A passenger showing reluctance was struck down and seeing one dacoit raise his pistol to shoot this passenger, Lance Naik Kyam Bahadur Rai overpowered him. Meanwhile, the other dacoits attacked him. Lance Naik Kyam Bahadur Rai valiantly fought with them single handedly, receiving a gunshot wound in the chest at point blank range. His continued heroic struggle inspite of grievous injuries ultimately forced the dacoits to flee.

2. In this act, even while not on duty, being unarmed and outnumbered, the individual in the highest traditions of the Indian Army considered the safety of the co-passengers more dear than his own life.

3. Late Lance Naik Kyam Bahadur Rai showed conspicuous courage and promptitude in saving the lives and properties of his co-passengers from dacoits and in the process made the supreme sacrifice of his own life.

8. Grenadier Narain Singh, (Posthumous)
Vill. & P.O. Upper Behli,
Teh. Sunder Nagar, Distt. Mandi,
Himachal Pradesh.

Grenadier Narain Singh was on casual leave from 14 September to 5th October, 1997 in his home town.

2. On 4th October, 1997 while returning from leave, he was walking along Baggi Sunder Nagar BBMB Canal enroute to Sunder Nagar to board a bus. Near village Dhanotu, he saw two girls Meena (22) and Ishwaro (20) who, in an attempt to avoid an onrushing but were pushed off the road and fell in the turbulent waters of the BBMB Canal and were drowning. With utter distregard to his personal safety, Grenadier Narain Singh jumped into the turbulent, fast flowing, icy cold waters with heavy flotsam, of the BBMB Canal, to rescue the drowned girls. Fighting the floatsam and swirling fast currents, Grenadier Narain Singh single handedly rescued Meena from underwater and brought her to the bank. Despite total exhaustion in rescuing Meena, Grenadier Narain Singh yet again went back into the swirling waters for Ishwaro who was not even in sight. After considerable attempts and a superhuman effort, Grenadier Narain Singh managed to get Ishwaro from the depths of the swirling waters. In the process Grenadier Narain Singh who had been totally exhausted with intense cramps due to the singlehanded super human valiant effort, was swept away by the turbulent waters of the BBMB Canal. Grenadier Narain Singh made the supreme sacrifice by laying down his life to save the lives of the two girls

3. Grenadier Narain Singh displayed bravery, courage and made the supreme sacrifice of his life in saving the lives of two girls from drowning.

9. Km. Karuna Dubey, (Posthumous)
D/o Shri Shyam Bihari Dubey,
Village Khezra Baag,
P.O. Bamhori Bikae
Distt. Sagar-470002.

On 05-02-1998, at around 8:30 P.M., a tractor trolley and dumper collided on the Siroja bridge. As a result, the trolley carrying several children including Master Sudesh Soudhe and Kumari Karuna Dubey fell into a nallah (drain) some distance away. Although, Master Soudhe was injured on the foot and ear, he rushed to the other children's rescue. With some efforts, he pulled Kamal, Kalpana and Nilima out of the nallah. Kumari Karuna Dubey had just reached the back of the nallah when she heard her brother and sister screaming for help. Jumping into the water again, she managed to pull out her brother Kardam & sister Kamini safely. She also attempted to save her other brother Kashyap but was not successful and in the process, she made the supreme sacrifice of her life.

2. In spite of her tender age, Kumari Karuna Dubey showed courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of two children and in her attempt to save her brother, she made the supreme sacrifice of her own life.

BARUN MITRA
Dy. Secy. to the President

No. 61-Pres/99.—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the undermentioned persons :—

1. Shri Kona Sreenivasa Rao.
S/o Shri Manikyala Desu.
Gentavanipalem,
Venduruparthi P.O.,
Minagapaka (Mandal),
Visakhapatnam Distt.,
Andhra Pradesh.

On 15-08-1996 at about 1700 hours, Shri Ganta Govinda, driver of a raft, over loaded the raft with 17 persons and their luggage to transport them to other side. The driver ferried the raft negligently and rashly due to which the raft submerged in the midst of the river and all the persons started drowning. At that time, one person, Shri Kona Sreenivasa Rao, who was attending to his agricultural works, without caring for the risk to his life, immediately jumped into the river and managed to save the lives of 10 persons from drowning.

2. Shri Kona Sreenivasa Rao showed courage and promtitude in saving the lives of 10 persons from drowning at the risk to his own life.

2. Shri Potu Venkata Seshajah,
Village Vennur, Kondepi Mandal,
Prakasam District,
Andhra Pradesh.

There are wet lands to the north of the Vennur village. The villangers/Agricultural coolies have to cross the Nallavagu (stream) which is not having any bridge to reach their fields for attending to agricultural operations. The villagers put two electrical poles across the stream to reach their fields. Due to heavy rain fall on 25-10-97 the water in Nallavagu (stream) spilled over the electrical poles with a depth of 7 feet. On 31-10-97, several persons of Vennur and Chowdavaram Villages witnessed the over-flowing stream and stood on the bank of the stream. But four females named Ms. Macherla Ramamma, Ms. Pilli Lakshmi Kanthamma, Ms. Buri Govindamma and Ms. Darla Audemma, residents of Chowdavaram Village, though cautioned and warned by the persons standing nearby, entered in the over-flowing stream. Due to the heavy current of water, they lost balance and fell into the water and while drowning they raised hue cry. Shri Potu Venkata Sheshaiah, who was present at the spot, jumped into the stream and rescued the above four ladies and saved their lives.

2. Shri Potu Venkata Seshaiah showed courage and bravery in rescuing four women from drowning in a stream, without caring for risk to his own life.

3. Shri Amar Singh Chauhan,
R/o RZ 6-275 Sagarpur (West),
Shankar Park,
New Delhi-46.

4. Shri Inder Singh,
S/o Shri Naresh Kumar alias Mast Ram,
Near Petrol Akhara Bazar,
Kullu (HP).

5. Shri Jagdev Singh,
S/o Shri Shiv Chand,
R/o Goshal, Distt. Lahaul,
and Spiti at present
Shangribag, P. O. Neoli,
Distt. Kullu (H.P.).

6. Shri Pawan Kumar,
S/o Shri Nagru,
Bodh of Tandi Distt.
Lathal and Sapiti at present,
Taman Seri Kharahal P.O.,
Neoli Teh., Distt. Kullu,
Himachal Pradesh.

On 22-06-98 at about 8.30 P.M., a bus No. CH-01-9583 belonging to M/s. Pal Travels, Chandigarh carrying 59 passengers was on the way from Manali to Kullu when it fell into river Beas at Ramshila, Kullu in the middle of river Beas. The bus turned upside down and was fully submerged in the water except a side corner of the rooftop. It was lying in a very precarious position. The water current was very swift and water level was rising further. A few survivors who managed to come out of the bus were sitting on the 2 feet high roof corner of the bus visible from outside. After learning about the accident, four local youths rushed to the spot and they arranged a rope and managed to throw it to the bus passengers who were sitting on the roof of the bus. They tied the rope with some parts of bus. Shri Amar Singh Chauhan, Shri Inder Singh, Shri Jagdev Singh and Shri Pawan Kumar, in the pitch dark hours of the night, despite grave risk to his life, reached the bus top, braving the strong current of water, at a distance of 100 feet from the bank of the river and saved the lives of 13 persons with the help of the other three youths.

2. Sh. Amar Singh Chauhan, Shri Inder Singh, Shri Jagdev Singh and Shri Pawan Kumar displayed courage and promtitude in saving the lives of 13 passengers from drowning in the river at the risk involved to their own life.

7. Smt. Asha Devi,
Vill. Batloth,
P. O Shillaroo, Teh. Theog,
District Shimla (HP).

In the intervening night of 7th and 8th July 1998 at about 1.30 AM while Smt. Asha Devi alongwith her family members was sleeping in her room in Village Kalawan, District Shimla, a leopard entered the room and took away her three year old son (Master Girish) from her bed. Smt. Asha Devi woke up and found her son missing from the bed. Then she saw a shadow—like figure moving out of the door. She immediately ran after the wild animal in the darkness for about 150 mtrs away from her house. She caught hold of the animal and able to snatch her son from the clutches of the wild animal. In the process she also received several injuries.

2. Smt. Asha Devi showed courage and promptitude in saving the life of her son from the Leopard at the risk to her own life.

8. Shri Rangila Ram,
Vill. & P.O. Alampur,
Teh. Jaisinghpur,
Distt. Kangra (HP).

9. Shri Sunil Kumar,
Vill. & P.O. Alampur,
Teh. Jaisinghpur,
Distt. Kangra (HP).

On 21-03-1998, while three students of Regional Engineering College, Hamirpur, were swimming in the River Beas, near Sujanpur town, all of a sudden, they were trapped in a whirlpool. One of the students, Shri Abhijit returned to the shore safely and the second student, Shri S. Raghu was drowned in the fast currents of the river. The third student, Shri Pankaj Juneja cried for help as he started drowning. On hearing his cries, two local fishermen, Sh. Rangila Ram and Sh. Sunil Kumar, who were fishing on the bank of the river, put their lives into risk and jumped in the river. Shri Rangila Ram caught Shri Pankaj from one hand and Shri Sunil Kumar caught the other hand and both of them managed to pull out Shri Pankaj out of the river at great risk to their lives.

2. Shri Rangila Ram and Shri Sunil Kumar also looked for the second student, Shri S. Raghu but they were not able to locate him.

3. Shri Rangila Ram and Shri Sunil Kumar showed courage and presence of mind in saving the lives of two students from drowning in a river, without caring for the risk involved to their own life.

10. Master Pramod E.
S/o Veerappa,
C/o A.B. Nagappa Gowda,
Athikodige, Chakranagar,
Hosanagar Taluk, Shimoga,
Karnataka.

On 4-7-97 at about 6.30 P.M. three persons came to the lonely house of Nagappa Gowda of Athikodige, Hosanagar Taluk, Shimoga District. They forcibly entered the house and committed robbery after assaulting Smt. Janakamma, W/o A. B. Nagappa Gowda. One Pramod S/o Veerappa, aged about 9 years, saw the incident while he was coming to home from the School. He immediately rushed to the fileds of one Ravindra which is situated at a distance of abou tone furlong from the house. He informed him about the incident which he had observed in the house of Shri A. B. Nagappa Gowda. Immediately, he shot with Shri Ravindra, rushed to the spot and protected the life of Smt. Janakamma. Shri Ravindra gave a tough flight to the assailants and over-powered one Ashiq Rehman. If the process Ravndra also sustained stab injury. The remaining two accused persons escaped with cash and Gold ornaments worth Rs. 10,000/-.

2. The gallant, brave and timely action performed by Master Promad saved the life of a lady and also helped in the arrest of one of the robbers..

11. Shri Kumar Mailarappa,
C/o R. S Jadhav Chawal,
Belleri Road, Waddargeri,
Gadag, Karnataka.

On 14-02-1997 Kumar Siddu and Kumar Jayanandayya Panchaksharayya Hiremath both aged 15 years were practicing swimming at Binkadakatti Village, Hugar well. While swimming they started drowning in the well. Meanwhile Kumar Mailarappa, a second year student, who had gone for swimming in the same well, saw the two boys drowning in the well. He immediately jumped into the well without caring for his own life and saved the lives of two students. The depth of the well is 34 feet and depth of the water level at the time of incident was 18 feet, the width of the well is 72 feet.

2. Shri Kumar Mailarappa showed courage and promptitude in saving the lives of two boys from drowning in a well without caring for the risks involved to his own life.

12. Shri Kumti Nagesh,
S/o Kumti Sheshakharvi,
Kumti House,
Medical Uppunda Village,
Kundapur Taluk, Udupi Distt.,
Karnataka.

In the morning of 5-8-97, Shri Ajjayya Beedu along with 8 other fishermen, all residents of Medical Uppunda village, went into Arabian Sea near Shiroor for fishing. Due to heavy rain and cyclone, their boat capsized in the sea. As a result, all the fishermen started drowning in the deep sea water and were shouting for help. The depth of the water at the time of the incident was about 25 feet and speed of the water current was about 100 km/hr. Shri Kumti Nagesh who was also going in another boat for fishing saw these persons crying for help. He immediately jumped into sea without caring for the risk to his own life and rescued the lives of all 9 fishermen.

2. Shri Kumti Nagesh showed courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of 9 persons from drowning at a great risk to his own life.

13. Shri Naren Miranda, (Posthumous)
S/o Shri Joseph Miranda,
R/o Hilfan Plantation,
Machattu Village,
Kundapur Taluk,
D. K. District, Karnataka.

On 31-5-96 at about 14.30 hours Naveen Rego and Naren Miranda went to take bath in Varahi River at Machattu village. The width of the river was 30 meters and the depth of the water in the river was 5 metres.

2. While taking bath Shri Naveen Rego suddenly started drowning in the river. On seeing this, Shri Naren Miranda immediately jumped into river, unmindful of the risk involved to his own life, for rescuing Shri Naveen Rego. Shri Naveen Rego caught hold of Naren Miranda but due to this both of them sank in the river. Immediately other people came to the spot and removed both of them with the help of sticks and rope. By that time Shri Naveen Rego was dead and Shri Naren Miranda was still breathing. Immediately, he was shifted to K.M.C. Hospital, Manipal, where he also breathed his last.

3. Shri Naren Miranda, without caring for his own life, acted with great courage in an attempt to save a person and sacrificed his own life in the process.

14. Kumari Rajeshwari,
Ramachandra Bhat,
C/o Ramachandra Narayan Bhat,
Sampkhand Hobli, Kolgibeers,
Hosmane Gram, Sirsi Taluk,
Karwar, Karnataka.

In the morning of 9-11-96, Kumari Rajeshwari Ramachandra Bhat, aged about 5 years and Kumari Bharathi, aged about 4 years who were playing nearby their house, went to field. While playing, Kumari Bharathi accidentally slipped into pond situated in the field and started drowning. The width of the pond was 14' and depth of water at the time of incident was about 4 feet. Pond had mud on its bank and a stone had been put on the bank for approaching the water. On seeing the incident, Kumari Rajeshwari without wasting time, jumped into the pond and holding the stone for support in one hand, she rescued the drowning girl, Kumari Bharathi with the other hand and saved her life.

2. Inspite of her tender age, Kum. Rajeshwari showed courage, promptitude and presence of mind in saving the life of a girl from drowning at great risk to her own life.

15. Shri Sardar,
S/o Shri Dyavappa Bandarwad.
R/o Itaga, Taluk Jewargi,
Distt. Gulbarga, Karnataka.

On 29-04-1995 morning one boy by name Saibanna, aged 11 years, had been to the bank of Bheema River (which flows in between Itaga and Bandrawad Village) for grazing his goats. Later at 12.00 noon he took one of his goats into the river for bathing it. At that time, a crocodile which was in the river caught hold of the right leg of Master Saibanna and began to drag him into water. Master Saibanna shouted for help. On seeing this incident, one boy Dyavappa, who was on the bank of river, ran to his uncle Sardar and informed him of the incident. Shri Sardar rushed to the spot immediately and saw the crocodile dragging the boy in the middle of the river, which was about 500 feet away from the bank. He plunged into the river and swam near the boy he caught one of his hands and began to pull him out from the mouth of crocodile in the river. After a struggle for about an hour with the crocodile, in 15—20 feet deep water, the crocodile at last left the boy from its jaws and went into water. Thus, Shri Sardar rescued the boy Saibanna from crocodile's mouth. Master Saibanna was thereafter admitted in Government Hospital Deval Ghangapur as he sustained injuries on his leg, thigh, Scrotum, urinary duct etc.

2. Shri Sardar showed courage, promptitude and presence of mind in saving the life of a boy from the clutches of a crocodile in a river at a great risk involved to his own life.

16. Shri C. J. Stephen,
Charukalungal Veettil,
Chappath P.O.,
Idukki District,
Kerala.

On 29-7-1997, a lady named Ranjeena, along with two children named Honey (aged three and half years) and Jobby (aged seven years) were going to School. When they entered the Chappath bridge over the Periyar river in the Elappara-Kattappana road of Idukki District, a private transport bus coming at a high speed lost its control. The bus hit the lady and the children from behind and they were thrown into the deep river. Since it was monsoon season, there was heavy rain and the river was turbulent, full of water and high water currents. The lady and children fell in the river and due to the strong water current drifted to a distance of about 200 metres away from the spot. Neither the passengers of the bus nor the villagers gathered there, dared to jump into the river to save them. On hearing of the incident, Shri Stephen rushed to the spot without wasting any time and, by risking his own life, jumped into the river. He managed to catch hold of the hair of the lady, swam across the river and saved her life. He again swam into the river and saved the lives of the two children one by one.

2. The courage and promptitude shown by Shri Stephen, despite risk to his own life, saved the lives of three persons including two children.

17. Shri Mathew Jose,
Poonattu House,
P. O. Velliyamattom,
Thodupuzha, Distt. Idukki,
Kerala.

On 1-8-1997 at about 9 A.M., Shri Augusthy was grazing his cow on the land of Shri Davassi Mathai. He unknowingly touched a broken electrical line. Suddenly the cow fell down and died and Shri Augusthy fell unconscious due to the powerful electric shock. The accident was due to snapping of one electric conductor of low tension single phase line and the voltage of electric supply at the time of the incident was 230 A.C.

2. On hearing the hollering of the cow, Shri Mathew Jose, who was working in a pine-apple plantation nearby, rushed to the spot. He at once realised the danger involved in the accident. He picked up a dry wooden stick and lifted the electrical line from the body of Shri Augusthy. Shri Mathew Jose also saved the life of the son of Shri Augusthy as he pushed him aside, when he began to hold his father, who was in electrical circuit. Then all people gathered there helped him to take Shri Augusthy to hospital. The timely act of Shri Mathew Jose had saved the life of a seriously shocked and burned man.

3. Shri Mathew Jose displayed courage and promptitude to save the lives of two persons from electrocution in disregard to the risk to his own life.

18. Shri E. Ramesh,
C/o Komattil Gangadharan Nair,
Eravimangalam,
Nadathara Village,
Thrissur, Kerala.

On 23-9-97, a van carrying 22 members of a family from Venjarammoodu near Thiruvananthapuram was going to Guruvayoor temple. It collided with a lorry at Amballoor, Trichur District and plunged into a 20 feet deep trench filled with mud and water. On hearing the loud noise of the clash and the cries from the passengers of the van, several people gathered at the spot. But unfortunately, nobody dared to come forward for the rescue operations as there was heavy rain and the trunch was marshy and about 20 feet deep.

2. In response to the cries of Shri Manikantan Nair, one of the members of the family in the van who had managed to escape from the van, Shri Ramesh, who was at his father's residence near the place of incident, without caring the risk involved to his life, jumped into the pond, bravely swam through the mud and water and saved the life of 12 persons, including the daughter of Shri Mannikantan Nair, with his help. Shri Ramesh was later on hospitalised after his long rescue struggle in the water. In this tragic accident 9 persons including a child lost their lives.

3. The timely and courageous act of Shri Ramesh, saved lives of 12 persons from drowning in a trench at great risk to his own life.

19. Shri Edacheriyan Rajeev,
S/o Vattiyan,
Murugalayam House,
Mattool North P. O.,
Kannur District, Kerala.

On 12-8-1997, at about 1 P. M. three fishermen namely Shri K. K. Abdul Majeed (42 years), Shri K. V. William (17 years) and Shri Abdul Nazar (18 years) went for fishing in the sea in a country boat. The boat capsized in the sea when it was 1 km. away from Mattool North and all of them were thrown into the sea. The sea was turbulent at that time. The depth of the sea at the place of incident was about 30 metres. The people on the shore who witnessed the accident were shouting helplessly. Hearing the hue and cry from the shore, Shri Edacheriyan Rajeev, who was taking tea at a nearby tea shop, ran to the spot. On seeing that the lives of three persons were in danger, Shri Rajeev plunged into the sea alongwith a long rope, without caring for the risk involved to his own life. He managed to reach near the persons who were struggling for life in the sea. By using the rope, Shri Rajeev brought the three men to the shore safely.

2. Shri Edacheriyan Rajeev showed courage and promptitude in saving the lives of three persons from drowning.

20. Kumari R. S. Apsara,
Ayanikkattu Konalhu Puthen Veedu,
Madavoor P. O., Pallickal,
Madavoor, Thiruvananthapuram Distt.,
Kerala.

On 25-11-97 at 5.30 p.m. Master Arvind Krishnan, a 7 year old boy, while playing with his sister Apsara (8 years old) accidentally fell into a well which was adjacent to their house. The well was 8 metre deep and 2½ metre wide. At the time of incident there was nobody in the house.

2. On seeing her brother in danger, Kumari Apsara took the rope which was used to fetch water from the well and put it into the well crying aloud for help. The boy in the well somehow managed to catch hold of rope and it helped him from being drowning. On hearing the cries of Kumari Apsara, Mr. Shaji, one of their neighbours rushed to the spot, and seeing the life of the boy in danger, he suddenly stepped down into the well, took the boy on his shoulders and brought him safely out of the well.

3. Despite her tender age, Kumari Apsara showed courage and promptitude in saving the life of her brother from drowning.

21. Shri T. Pradeep Kumar,
Kizhakkumkara Kizhakkethil,
Karamvel P. O., Elanthur,
Pathanamthitta Distt.,
Kerala.

On the night of 11-03-1996 Shri Sudhakaran was on his way back to his house, through the Canal side. He accidentally skid and fell into the Canal and was carried away. The concrete walls of the Canal are 4.4 Mts. in height sloping from top to bottom with a width of 10.2 Mts. at the upper part and 5 metres at the bottom. At the time of the incident, the water level was about 3 metres and the water current was very high.

2. When Shri Sudhakaran was drowning, he cried for help. The nearby residents who assembled on the bank of the Canal were not able to save him as the wall of the Canal was slippery and the water current was high. None of them dared to jump into the Canal to save him. At this time Shri T. Pradeep Kumar reached there. On seeing the life of the person in danger, he at once jumped into the canal without caring for the risk involved to his own life. After much struggle, he managed to bring the drowning person to the shore, but he could not take him to the bank through the side wall, as it was very slippery. In this attempt, Shri T. Pradeep Kumar got tired and started drowning in the river.

3. At this critical moment, V. A. Ushakumari, who was witnessing the incident on the bank of the Canal, put her saree into the Canal, catching firmly the other end in her

hand. She with the help of others pulled out the two drowning men out of the Canal one by one.

4. Shri T. Pradeep Kumar showed courage and presence of mind in saving the life of a person from drowning at an utter disregard to his own life.

22. Master Yumnan Jayadev Singh,
S/o Shri Yumnan Sanathoi Singh,
Nambol Bazar, Dishnupur District,
Manipur.

On 6-7-1998 at about 9.30 a.m., a small boy (age 3½ years) while crossing the river Nambol at Nambol Awang over a broken wooden bridge (having a span of 100 ft. and a height of 10 ft. above the water level) slipped through a hole in the bridge and fell into the turbulent river. At that moment, a boy aged about 9 years, Master Y. Jayadev Singh who was passing by the river, saw this boy falling down into the river. He rushed towards the boy, jumped into the river and searched for the boy. He located the boy and caught hold of him by his arms. Both of them were carried away by the strong water current downstream for about 50 ft. Holding one arm of the boy, Master Jayadev swam towards the shore for about 100 ft. With great difficulty and thus saved the boy from drowning.

2. In spite of his tender age, Master Y. Jayadev Singh showed courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning at risk to his own life.

23. Master Alexander Kharnaior,
Mawalai-Mauions Rim,
Shillong, East Khazi Hills,
Distt. Meghalaya.

On 26-08-1997 at about 3.30 PM, Master Alexander Kharnaior while returning from school, went towards Umiam Lake near the Aquatic Sports Resort for a swim. In the vicinity there were many other persons who had gone to the spot for fishing. The breadth of the lake is about 1000 metres and it is 30/35 metres deep. Suddenly, everybody near the lake saw a man drowning in water and calling out for help. On seeing the man drowning, Master Alexander Kharnaior looked around and ran towards a boat lying at the shore. He held the boat in one hand and swam towards the drowning man without caring for the risk involved to his own life. He somehow managed to make the man cling on to the boat and brought him safely to the shore.

2. Master Alexander Kharnaior showed courage and promptitude in saving the life of a boy from drowning without caring for the risk involved to his own life.

24. Master Romu Chhetri, (Posthumous)
Bazar Bungkawn, Dawrpui,
Aizawl, Mizoram-796001.

On the 20-05-1998, Master Romu Chhetri decided to take a mini truck down to the river Rukni (Hawaithang) for a thorough clean up. He was accompanied by his cousin (as a helper) and two young girls of the village.

2. One of the girls, Jenny who was washing the truck, slipped and fell down into the river. The depth of the river was 15 to 40 ft. and width 100 ft. approx. The strong current of the water instantly pulled her to the centre of the river and she was on the verge of drowning. Immediately, Master Romu, who was not a good swimmer, dived into the river to save Jenny. With great efforts, he managed to push the girl to a safe place before he was caught in the muddy depths of the river and never surfaced again.

3. Immediately after this a massive search was conducted with the help of the local persons and his dead body was found after two hours at a depth of 15 ft.

4. Master Romu Chhetri showed courage and presence of mind in his attempt to save the life of a girl and in the process made the supreme sacrifice of his own life.

25. Master Satyabhama Sahoo,
S/o Chandramani Sahoo,
Village Jakeikela,
P. S. Bonai, Distt. Sundargarh,
Orissa.

On 01-10-1997 at about 12 noon, Master Visma Behera aged 6 years, alongwith Anil Kumar Behera, aged 9 years, and Satyabhama Sahoo, aged 12 years were taking bath in river Brahmani at Jakeikela bathing ghat. The depth of water at the time of incident was about 2½ ft. to 3 ft. On the river bank Shri Akhaya Kumar Behera, father of Anil Kumar Behera, Shri Debananda Behera elder brother of Akhaya Kumar Behera and A.P.R. Constable, Shri Himansu Pradhan, were sitting and gossipping. When the three children were taking bath, Master Visma entered deep into the river, where the depth was about 6 to 7 ft. and started drowning. While he was drowning, Master Satyabhama Sahoo went near him, caught hold of him and tried to rescue him. The other boy Anil Kumar Behera, also went near them. As Visma Behera caught hold of Master Satyabhama Sahoo, Satyabhama Sahoo could not rescue him. On the other hand, he was also going to drown. In the meantime, Shri Akhaya Kumar Behera, Shri Debananda Behera and Shri Himansu Pradhan, who were gossipping on the bank of the river Brahmani, seeing the incident, jumped into the river. Shri Himansu Pradhan rescued Master Visma Behera, Shri Debananda Behera rescued Master Satyabhama Sahoo and Shri Akhaya Kumar Behera rescued Master Anil Kumar Behera and they brought them all to safety.

2. Master Satyabhama Sahoo showed exemplary courage in approaching the drowning boy quickly and attempted to save his life at the risk to his own life.

26. Shri Anshul Kumar Nandwana, (Posthumous)
S/o Shri Kunj Behari,
Nandwana, 1-B-19-Talwandi,
Kota, Rajasthan.

27. Shri Manoj Verma, (Psthumous)
S/o Shri Lal Chand Verma,
R/o Vigyan Nagar,
Kota, Rajasthan.

28. Shri Raj Kumar Thathera, (Posthumous)
S/o Shri Giridhar Gopal,
Thathera, Agarsen Bazar,
Kota, Rajasthan.

On 20-8-1995, a team of the members of Noni Health Centre, went for visiting tourist sites at Chitargarh. Out of these members, four persons, Shri Anshul Kumar Nandwana, Shri Raj Kumar Thathera, Shri Lakshmi Narayan Songara with Shri Manoj Verma, owner of the Health Centre, went down to see the waterfall. Some ladies and children of a family were taking bath there. Suddenly, the flow of the water increased, and the ladies and children were surrounded by the water and they shouted for help. The four boys, showing humanity and concern, moved down in the water forming a human chain to rescue them without caring for the risk involved to their own lives. They, rescued 5 children one by one. By that time, the water level rose further. While they were trying to save the two ladies, one lady Smt. Vimla Singhal slipped and caught hold of Shri Anshul Kumar due to which, the human chain broke and they lost their control. All of them except Shri Lakshmi Narayan, were drowned and lost their lives in the process. In all, six persons lost their lives.

2. Shri Anshul Kumar Nandwana, Shri Manoj Verma and Shri Raj Kumar Thattera showed courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of 5 children and made the supreme sacrifice of their lives in an attempt to save the lives of two other ladies.

29. Shri Digvijay Singh, (Posthumous)
Plot No. 54, Chander Nagar,
Gopal Pura Bypass,
Jaipur, Rajasthan.

On 16-4-1996, a calf fell down in a well in Hamirpur Village. The well was 30 feet deep and round shaped with a diameter of 11 feet and the level of the water in the well

was 6 feet. First of all, Shri Hanuman went inside the well with the help of a rope to save the life of the calf and was trapped inside the well due to presence of poisonous gas. Thereafter Shri Digvijay Singh went inside the well to save Shri Hanuman without caring for the risk involved to his own life. He also fell unconscious due to presence of poisonous gas and lost his life.

2. Shri Digvijay Singh showed courage and bravery in an attempt to save the life of a person from drowning in a well and made the supreme sacrifice of his life in the process.

30. Shri Mahender Singh Chauhan,
S/o Shri Nemichand Chauhan,
Shiv Nagar, Mahamandir,
Jodhpur, Rajasthan.

On 22-6-1996, the village of Khivsar was flooded with water. About 1 km from the village, one bus was trapped in the flood waters at bypass on Nagore-Jodhpur road. Shri Mahender Singh Chauhan of Khivsar Village entered the flood waters to save the lives of the passengers trapped in the bus. He carried three persons on his shoulders one by one and rescued them by bringing them to a safe place.

2. Shri Mahender Singh Chauhan showed courage, promptitude and presence of mind in saving the lives of three persons from drowning without caring for the risk involved to his own life.

31. Shri Tejveer Singh,
Project Tiger Campus,
Sariska, Rajasthan.

On 20th December, 1997 a panther came out of the Sariska wildlife sanctuary and was spotted near village Shota-ka-bar, Police Station Malakhera. It attacked and injured three villagers and then took refuge inside the hut of one Bhoriya Saini. There was considerable panic among the villagers.

2. On getting the message, Shri Tejveer Singh, Field Director, Sariska alongwith a rescue party rushed to the village Shota-ka-bar. A crowd of more than one thousand persons had assembled near the house in which the panther had taken refuge. It was a kuchha hutment with thatched roof and two gates without doors on both sides. It was decided to fire injecting projectile for tranquillizing the panther. Both the doors were covered with big rugs by forest guards to prevent the panther from coming out of the house. Mr. Tejveer Singh climbed on the thatched roof of the hutment and made a barrel hole and peeped into the hut with the help of a "Dragon light". As he was preparing for the next step, the panther jumped out of the thatched roof and attacked Shri Tejveer Singh by bitting his hand and causing seven injuries. The panther then jumped on the other side and entered in a nearby kuchha chappar. Shri Tejveer Singh did not loose his coolness and courage and made another attempt to catch the panther alive. He transquillized the panther and with the help of a dari, pounced upon the panther covering the panther with dari and caught him.

3. Shri Tejveer Singh showed courage, bravery and presence of mind in saving the lives of the villagers and capturing the panther alive, without caring for the risk involved to his own life.

32. Shri Tashi Topgyal Bhutia,
Burtuk, Near Swastik,
P.O. Gangtok, Sikkim.

On 19-1-98 at around 10-10 a.m. a bear entered the premises of the Sikkim Time Corporation, a public sector watch assembly unit which is located in an urban area very close to Deorali Bazar near Gangtok. The staff of the watch assembly unit were at their tea-break and therefore all of them were either on the lawn or in the canteen. On appearance of the bear, the employees, most of them being women, panicked and a large number of them ran inside the watch assembly building where the bear followed them. While around 30 of them barricaded themselves inside the toilets and the cloak room, a few were unfortunate enough to encounter the animal in the corridor where one of the girls was attacked and seriously injured. Two other girls also sustained minor injuries. Although these injured girls were also able to find temporary refuge in the bathroom when the bear entered the other adjoining rooms, they along with the others trapped in the bathroom and the cloak room were by no means out of danger as the bear was repeatedly trying to force entry into these rooms by launching itself into the wooden doors, which would have eventually broken down.

2. The bear then entered the adjoining AC plant room. Mr. Tashi Topgyal Bhutia, who was watching the movements of the bear inside the room. Mr. Bhutia with succeeded in the animal inside the room. Mr. Bhutia with tremendous courage and without concern of his personal safety took a great risk to open the main door, enter the building and bolt the AC plant room from outside. Thereafter he signalled the girls trapped inside the two rooms and escorted them outside to safety. His action was not a moment too soon as the bear broke through the ventilation of the AC room and was loose inside the building once again.

3. Mr. Tashi Topgyal Bhutia's bold and timely action therefore possibly saved the lives of 30 staff persons from serious injury and possibly fatal casualties.

33. Shri Manoj Samant,
Jakhani Village,
Patwari Area Meharkhal,
Tehsil & Distt. Pithoragarh,
Uttar Pradesh.

On 18-3-1997, at around 2.30 PM, a man-eater lion entered the Rai village, Pithoragarh Distt. and attacked a villager. Due to the sudden attack, other villagers started running here and there to save their lives. At that time, Shri Manoj Samant, who was passing by, reached the spot and hit the lion on his head with a stick (danda) from the back. The lion then attacked Shri Manoj Samant who fought with the lion for about 5 minutes. Shri Samant was seriously injured. In the meantime the villagers returned with arms and attacked the lion who was forced to run away, out of the village.

2. The courage, promptitude and presence of mind shown by Shri Manoj Samant, unmindful of the risk to his own life saved the life of a villager.

34. Shri Md. Ali, (Posthumous)
1/Z, J. K. Ropeways Colony,
P. O. Madampur, P.S. Andal,
West Bengal.

On 9-4-98, four minor boys Master Sandeep Das, Master Paritosh Mondal, Master Jayanta Mondal and Master Subhadip Das, while playing in the water, were trapped in a sand pit in the river Damodar. On hearing the cries of the drowning boys, Shri Shankar Mondal and Shri Jiban Chatterjee, rushed to the spot. Shri Shankar Mondal saved Master Jayanta Mondal, Master Paritosh Mondal and Master Sandeep Das in two attempts after which he was exhausted, Shri Jiban Chatterjee, who did not know swimming, could not rescue subhadip Das, who, in the meantime was drowning and drifting away. Shri Md. Ali was sitting on the bank of the river and on hearing the cries of the boys, rushed to the spot and without caring for his own safety jumped into river to save Master Subhadip Das. He swam across the river to the site where Subhadip had drifted and after a number of dives he was able to ascertain the position of Master Subhad p. However in his attempt to rescue the boy, Shri Md. Ali was dragged along with Master Subhadip to the river bed which resulted in his death. The body of Shri Md. Ali was recovered on the same day in Madampur.

2. Late Md. Ali showed courage and bravely in his attempt to save the life of a boy from drowning and made the supreme sacrifice of his own life in the process.

35. Havildar Bijender Singh,
Vill. & P. O. Kalinga,
PS & TO Kalanor,
Teh. & Distt. Rohtak,
Haryana-124001.

Havildar Bijender Singh and a number of soldiers and families were struck up till late night due to landslide at "Kaudilya" Distt. Tehri (UP) on 4th September, 1996, on their way to Rishikesh.

2. At around 2300 hrs, the daughters of a colleague were standing on the road side with their mother. Suddenly a leopard jumped in and lifted the seven year old daughter and jumped down the steep forested slope on the road side.

3. Havildar Bijender Singh at the risk of his own life, instantly jumped down the slope following the leopard. Rolling on the slope, running and jumping, he reached the leopard which had moved nearly 120 yards by then. Father of the girl a few other soliders also followed him

4. Havildar Bijender Singh valiantly and single handedly fought with the Leopard and rescued the child from the claws of the Leopard. The Leopard attacked back and hit the child on her face with its palm. At this, Hav. Bijender Singh hit the Leopard on its forhead with his torch. Then the Leopard withdrew, and the girl was brought to the road and rushed to the hospital at Rishikesh.

5. Havildar Bijender Singh displayed an act of sheer bravery and valour in saving the life of a child.

36. Sowar Hoshiyar Singh Yadav. (Posthumous)
Vill. Gandhi Nagar,
P.O. & T.O. Mandawar,
Distt. Alwar, Rajasthan.

On 4th July, 1995 at 0800 hours Sowar Hoshiyar Singh Yadav of 66 Armoured Regiment who was on annual leave at his village Gandhi Nagar in Alwar District of Rajasthan, heard shouts for help from a dry well in the village. He immediately reached the spot and was informed by the crowd gathered around the well that three persons who had gone into the well to extricate the body of a dead goat were unable to come out of the well due to smoke and poisonous gases inside the well which had resulted due to burning of tyres and dry grass

2. Sensing the criticality of the situation and threat to the lives of persons in the well, Sowar Hoshiyar Singh, despite the danger to his life due to poisonous gases, immediately climbed down the well carrying a rope. He located one person who was already unconscious, tied the rope around him and the villagers pulled him out of the well. Notwithstanding the poisonous gases around and threat to his own life, Sowar Hoshiyar Singh continued to search for the other two persons dogedly. However, after some time he found himself also being affected by the gases and started climbing out of the well. He could only reach half way and having been badly affected by the gases fell back into the well and succumbed to asphyxia.

3. Sowar Hoshiyar Singh, thus displayed conspicuous courage, valour and performed an act of humane nature voluntarily to save the lives of fellow human beings and in the process made the supereme sacrifice of his own life.

37. 2/Lt Kesu Prasad Nair,
24, Rajdeep, Moh Pendse Colony,
Kiwale, Teh. Ravet, Distt. Pune,
Maharashtra.

On 6th March, 1996 at 1400 hours, Kesu Prasad Nair was coming back to the unit from Rupa, West Kameng District (Arunachal Pradesh). Just short of Chugh Bridge, on the Bomdila—Tenga Road, he saw people gathered on the road side. He saw that a man hanging on a creeper 50 ft down a steep crevice with a fast flowing nala underneath. People watched helplessly, while the man was screaming for help.

2. 2/Lt Kesu Prasad Nair did not waste a second. With utter disregard to his personal safety, asked the driver to remove the rope of the vehicle he was travelling in. He tied the rope to the nearby pole and slithered down to the spot where the civilian was hanging. He tied the rope on the individuals waist and asked the driver to pull him up. Only after the civilian had reached up safe and sound did he come up with the help of the rope, knowing very well that one slip and he would have lost his life.

3. 2/Lt. Kesu Prasad Nair showed presence of mind, exemplary courage and bravery in saving the life of an unknown man.

38. Lance Naik Madassery
Pappachan Wilson,
Vill. & P. O. Mookkanoor,
Distt. Ernakulam,
Kerala.

Lance Naik Madassery Pappachan Wilson was residing in Mookkanoor near Ernakulam in Kerala during his leave period. On the night of 2nd April, 1997 a major fire broke out in a hardware shop which was located in a shopping complex consisting of 12 shops. The fire gutted the entire shop and was spreading. The magnitude of the fire could be assessed by the fact that 12 fire engines had to be rushed to control the fire from spreading to the other shops in the complex.

2. Lance Naik Madassery Pappachan Wilson immediately took charge of the situation. He rallied the local villagers, policemen and fire fighting personnel who had reached there and directed the rescue operations. His timely intervention; leadership in a moment of grave danger and stress, presence of mind and absolute disregard to personal safety helped to save a large number of lives and also the other shops and property in the area. In the act Lance Naik Madassery Pappachan Wilson was gravely injured and was admitted for treatment in the Intensive Care Unit of the specialist Hospital at Ernakulam, Kochi, Kerala.

3. Lance Naik Madassery Pappachan displayed courage, presence of mind in saving many lives and property from fire.

39. Naib Subedar Pramod Padhi,
Vill. Bada Kholi,
P.O. Bhetnoi, Distt. Aska,
Orissa.

On 20 September, 1996, Naib Subedar Pramod Padhi was supervising the unit pipe band practising in the New cantonment area of Gangtok, when at approximately 1000 hours, he noticed two boys running upto him, their faces contorted in apparent panic. On questioning the boys, Naib

Subedar Pramod Padhi learnt that one of their playmates, namely, Bal Bahadur had fallen into an uncovered water tank while playing Realising that any loss of time could prove fatal, Naib Subedar Pramod Padhi rushed to the water tank. The boy was not visible as the water was opaque due to algae and flotsam. There was no movement to indicate any presence of the boy.

2. Undaunted and with disregard to his personal safety, Naib Subedar Pramod Padhi lowered himself into the tank. After a few seconds he emerged with the boy in unconscious state. Naib Subedar Pramod Padhi, displaying commendable presence of mind, administered first aid to expel accumulated water from the boy's lungs and restored respiration. He then carried the boy in his arms to a vehicle standing nearby and took the victim to the Intensive Care Unit of Military Hospital, Gangtok where he was administered life saving treatment.

3. Naib Subedar Pramod Padhi showed conspicuous courage, promptitude and presence of mind in saving the life of a boy from drowning.

40. Naik Ranjit Singh,
Vill. & P.O. Nagjagi,
Distt. Chamoli (Garhwal),
Uttar Pradesh-246419.

41. Lance Naik Shanti Prasad,
Vill. Adev Dhunga,
P.O. Purola,
Distt. Uttarkashi,
Uttar Pradesh.

The Mountaineering Expedition Team of the Garhwal Rifles had been preparing to scale Chaukhamba I Peak at a height of 23,420 feet in the Garhwal Region. As per the schedule the team was carrying out its preliminary training and preparations at Gauri Kund near Gangotri. On 19 August, 1996 a civilian from the nearby village came rushing to the camp site and informed Naik Ranjit Singh that a French lady (later identified as Mrs Shirley Marquis) had fallen into a gorge from a vertical ledge 60 feet above river Bhagirathi (Ganga) while she was sight-seeing. Without waiting for any orders Naik Ranjit Singh immediately took the initiative and rushed to the accident site alongwith Lance Naik Shanti Prasad.

2. On reaching the accident site, Naik Ranjit Singh and Lance Naik Shanti Prasad found that the lady had fallen down into the gorge and was lying on huge boulders. He immediately anchored himself with ropes, rapelled down into the gorge and with great difficulty managed to reach the site where the lady was lying in an unconscious state. Naik Ranjit Singh and Lance Naik Shanti Prasad then lifted the lady with delicate care and caution on their back one by one to avoid any further injury to the lady and started climbing up along the steep gradient. The ascent became very strenuous with every foot of the climb but both the jawans continued their move up determinedly and unmindful of the dangers to their personal safety, negotiating the narrow gorge which had sharp boulders jutting out and loose stones falling from the top. They eventually helped one another in carrying the unconscious lady up the vertical slope skillfully and arrived at the top, totally exhausted. With their sheer will and grit, they rescued the helpless lady from the jaws of death.

3. Naik Ranjit Singh and Lance Naik Shanti Prasad displayed an act of absolute concern for human life and selfless devotion to duty in saving the life of the lady.

42. Lance Naik Sharad Kitukale,
Vill. Fubagaon,
P. O. Kurala,
Teh. Chandur Bazar,
Distt. Amravati,
Maharashtra.

On 25th March, 1997 Lance Naik Sharad Kitukale was on picket guard duty near the helipad constructed by his company near village Katholi, Rajasthan. At about 2100 hours he noticed fire coming out of the roof of a nearby hut. Immediately he woke up others, obtained permission of Guard Commander and rushed to the site. He was the first one to reach there. He noticed that a lady was crying outside the hut as her two children were inside the burning hut. Immediately he rushed inside without caring for his own life and brought out both the children. Within half minute of the children having been brought out the whole thatched roof came crashing down. This timely and quick action by Lance Naik Sharad Kitukale saved the lives of the two children, one of whom was less than a year old.

2. Lance Naik Sharad Kitukale displayed courage and presence of mind in saving the lives of the two children.

43. CFN/VM (AFV) Shyam Bihari Upadhyay, (Posthumous)
Vill. Dilia, P. O. Madhanpur,
Teh. Jagdishpur,
Dist. Bhojpur, Bihar.

On 10th May, 1996 Cfn Shyam Bihari Upadhyay of LRW HQ Sqn 43 Armd Bgd. was detailed to assist in the performance of post funeral rites of the deceased daughter of a JCO, of the same unit.

2. Cfn Shyam Bihari Upadhyay accompanied the JCO to the Bhakra Canal for immersion of the ashes of the deceased. While doing so, the JCO accidentally slipped into the canal. In order to save the JCO, his wife also jumped into the canal and both of them were swept away by the swift current.

3. Cfn Shyam Bihari Upadhyay, unmindful of the extreme danger to his life, immediately jumped into the swirling waters of the canal in his combat dress to save the lives of the JCO and his wife. He battled the swift current for considerable time till he could save the wife of the JCO. Undeterred by the strain and exhaustion, Cfn Shyam Bihari Upadhyay displaying exemplary courage, renewed his attempt to save the JCO. He though feeling exhausted, continued his efforts to rescue the JCO and finally succeeded in saving him. By then, the swift and swirling waters of Bhakra Canal had completely exhauted Cfn Shyam Bihari Upadhyay who then got swept away and was drowned.

4. Cfn Shyam Bihari Upadhyay gave the supreme and ultimate sacrifice of his life while saving the lives of a person and his wife.

44. Master Anurag,
E-302, Gali No. 6
Subhash Vihar,
Bhajanpura,
Delhi-110053.

45. Master Mohd. Atif,
B-4/141, Yamuna Vihar,
Delhi-110053.

46. Kumari Shivani Sharma,
C-407/H, Gali No. 25,
Bhajanpura,
Delhi-110053.

On 18-11-1997 Kumari Shivani Sharma and her younger brother Jatin boarded their bus in the morning to go to school. Mohd. Atif and Anurag were already in the bus which was packed beyond its capacity. While crossing the Wazirabad Bridge on the river Yamuna, the speeding bus overturned and breaking the iron railing of the bridge, fell into the river. Within moments, the bus was filled with water. Trapped in between the seats, the students made desperate attempts to get out of the bus. With immense efforts, Shivani, Atif and Anurag somehow managed to reach close to the window and broke the window panes. Thereafter, they pulled out several students through the window and helped them to climb atop the roof of the bus safely. The children were rescued from there by fishermen and others in boats.

2. Master Anurag, Master Mohd. Atif and Kumari Shivani Sharma showed courage promptitude and presence of mind in saving the lives of number of students from drowning in a river.

47. Master Sanket Surendra Salvi,
D/1 17-138, M. I. G. Colony,
Gandhinagar, Bandra (East),
Mumbai-400051, Maharashtra.

On 02-02-1998, at around 7.30 PM, some children were were playing in the compound of a building in Patnaker Nagar Colony. Suddenly, a stray dog jumped on one of the children and bit him on his right arm. Master Sanket, who was standing with his friends nearby, rushed forward to help him. The dog however fled and advanced towards five year old Aditi Vyas standing at some distance. The dog caught her nose firmly between his jaws and was about to grip her throat. Petrified, the little girl screamed. On hearing the noise, other stray dogs gathered and soon Aditi was surrounded by seven or eight dogs. Realising the danger, Master Sanket ran towards Aditi without caring for his own life. He gripped the dogs' jaws firmly with both his hands and swung the dog away from the girl. Master Sanket lifted Aditi, who was bleeding profusely and drove away other dogs. Aditi was the taken to hospital where she had to undergo plastic surgery.

2. Master Sanket Surendra Salvi showed courage, promptitude and presence of mind in a saving the life of a girl in the dogs attack.

48. Master Sudesh Kumar Soudhe,
Vill. Babupura,
Teh. Sagar, Distt Sagar,
Madhya Pradesh-470002.

On 05-02-1998, at around 8.30 P.M., a tractor trolley and dumper collided on the Siroja bridge. As a result, the trolley carrying several children including Master Sudesh Soudhe and Kumari Karuna Dubey fell into a nallah (drain) some distance away. Although, Master Sudesh Soudhe was injured on the foot and ear, he rushed to the other children's rescue. With some efforts, he pulled Kamal, Kalpana and Nilima out of the nallah.

2. Master Sudesh Kumar Soudhe showed courage promptitude and presence of mind in saving the lives of several children from drowning in a nallah.

BARUN MITRA, Dy. Secy. to the President

LOK SABHA SECRETARIAT

(Standing Committee on Agriculture)

New Delhi—110001, the 24th March, 1999

No. 6/1/2/AC/99.—Shri C. Suresh Reddy, M. P. Lok Sabha, has been nominated by Hon'ble Speaker, Lok Sabha to the Departmentally Related Standing Committee on Agriculture with effect from 18th March, 1999 vice Lt. Gen. (Retd.) N. Foley who ceased to be a member of this Committee.

S. BAL SHEKAR, Dy. Secy.

MINISTRY OF STEEL AND MINES

(DEPARTMENT OF STEEL)

New Delhi, the 30th March 1999

RESOLUTION

No. E.11015(4)/96-Hindi.—Ministry of Steel and Mines, Government of India (Department of Steel) have decided to reconstitute the Hindi Salahkar Samiti of the Department of Steel. The Composition functions etc. of the reconstituted Samiti will be as given hereunder :

I. **Composition**

1. Minister of Steel & Minister of Mines — Chairman
2. Minister of State for Steel & Mines — Vice-Chairman

Non-Official Members

3. Dr. (Mrs.) Prabha Thakur, M. P. (Lok Sabha), 44, Meena Bagh, New Delhi. — Member
4. Mrs. Krishna Bose, M.P., (Lok Sabha), 72, North Avenue, New Delhi. — Member
5. Shri Sohan Potai, M. P. (Lok Sabha) New Delhi. — Member
6. Shri Balasahib Vikhe Patil, M. P. (Lok Sabha), New Delhi. — Member
7. Shri Sanatan Bisi, M. P. (Rajya Sabha), New Delhi. — Member

8. Shri Devi Prasad Singh, M. P. (Rajya Sabha), New Delhi-	Member
9. Shri Haribabu Kansal, E-9/23 Vasant Vihar, New Delhi-57	Member
10. Shri Vibhuti Mishra, 148, Daraganj, Allahabad-211008.	Member
11. Shri Ramesh Nayar, Samata Colony, Raipur-492001.	Member
12. Dr. Kesari Lal Verma, Ganga Ram Nagar, 2/1072, Ramkund, Raipur (M. P.)-492001	Member
13. Dr. H. L. Bacchotia, K-40, F, Saket, New Delhi-110017.	Memb
14. Dr. Vishnu Singh Thakur, Om Society, Sunder Nagar, Raipur-492013.	Member
15. Shri Ramnath Shukla, 238/172, Elanganj, Allahabad-211002.	Member
16. Dr. Shankar Lal Purohit, D-35, B. J. B. Flat , Bhubneshwar-751015.	Member
17. Shri S. M. Ramchander Swami, Sharda Vihar, 89/2, Anjneya Temple Street, Basawangudi, Banglore-560004.	Member
Official Members	
18. Secreary (Steel), Department of Steel	Member
19. Additional Secretary & F.A., Department of Steel.	Member
20. Secretary, Department of Official Language	Member
21. Another representative of the Department of Official Language	Member
22. Development Commissioner for Iron & Steel, Calcutta.	Member
23. Chairman, Steel Authority of India Ltd., New Delhi.	Member
24. Chairman-cum-Managing Director, National Mineral Development Corporation Ltd., Hyderabad.	Member
25. Chairman-cum-Managing Director, Metallurgical & Engg. Consultants (India) Ltd., Ranchi.	Member
26. Chairm-cum Managing Director, Bharat Refractories Ltd., Bokaro Steel City, Bihar.	Member
27. Chairman-cum Managing Director, Manganese Ore (India) Ltd., Nagpur.	Member
28. Chairman-cum-Managing Director Kudremukh Iron Ore Co. Ltd. Bangalore.	Member
29. Chairman-cum-Managing Director, Rashtriya Ispat Nigam Ltd., (Visakhapatnam Steel Plant), Visakhapatnam.	Member
30. Chairman -cum Managing Director, M.S.T.C. Ltd., Calcutta.	Member
31. Chairman-cum Managing Director, Hindustan Steel Works, Corporation Ltd., Calcutta.	Member
32. Chairman-cum Managing Director. Sponge Iron India Ltd., Hyderabad.	Member
33. Managing Director, Ferro Scrap Nigam Ltd., Bhilai.	Member
34. Joint Secretary (Incharge of Official Language), Department of Steel.	Member-Secretary

II. FUNCTIONS

The functions of the Samiti will be to render advice in regard to the implementation of the provisions relating to Official Language contained in the Constitution, Official Language Act and Rules, and policy decisions of the Kendriya Hindi Samiti and instructions issued by the the Ministry of Home Affairs (Deptt. of Official Language) relating to official language and also in regard to the progressive use of Hindi in the Department.

III. TENURE

Normally, the tenure of the Samiti will be 3 years. If a person is nominated as member in the middle of the term, he will hold the office for the residual term of the Samiti. In special circumstances, the tenure of the Samiti may be curtailed or enhanced by the Department.

IV TRAVELLING AND OTHER ALLOWANCES

Non-official members Will be paid travelling and daily allowance for attending the meetinsg of the Samiti as per guidelines issued by the Deptt. of Official Language vide their O.M. No. 11-20034/486-O.L. (A-2) dated the 22nd January, 1987 and as per rates revised and rules prescribed by the Govt. of India from time to time.

ORDER

Ordered that a copy of the resolution be communicated to all State Government and Union Territory Administrations, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, Ministry of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretriat, Rajya Sabha Secretariat, lanning Commission, President secretariat, controller and Auditor General of India, Accountant General, Central Revenues and all Ministries and Departments of the Government of India.

Ordered also that the Resolution be Published in the Gazette of India for general information.

NARESH NARAD, Jt. Secretary.

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

(DEPARTMENT OF CULTURE)

New Delhi, the 30th March 1999

No. F-24-17/97—M-1—In pursuance of the Rule 4 of the Society of the National Museum Institute of History of Art, Conservation and Museology, Delhi, the President is pleased to reconstitute the Society of National Museum Institute of History of Art, Conservation and Museology for a period of three years from the date of issue of the resolution or till the Society is reconstituted whichever is earlier,

COMPOSITION OF THE SOCIETY OF NMIHACM

1. Minister of Human Resource Development — Chairman
2. Dr. R.D, Choudhary, Director General, National Museum — Vice Chairman (Ex Officio)
3. Dr. M.N. Deshpande, D-25, Press Enclave, Saket, New Delhi, — Member
4. Dr, Krishna Dev, C/121, DDA Flats, Saket, New Delhi. — Member
5. Dr. S.P, Gupta, B-17, Qutub Industrial Area, South IIT, New Delhi. — Member
6. Dr. Jyotindra Jain, Director, Crafts Museum, Bhairon Road, New Delhi. — Member
7. Prof. Maheshwari Prasad, Department of Ancient Indian History Culture & Archaeology, Banaras Hindu University, Varanasi. — Member
8. Prof. K.V. Raman, 34, 5th Cross Road, Mandavalippakkam Chenai-600024. — Member
9. Prof. A. Sundara, 115, Giri Niwas, KHB colony, Sholapur Road, Bijapur, Karnataka-586103. — Member
10. M.P. to be nominated latter on clearance from Ministry of Parliamentary Affairs — Member
11. Ms. Saryu Doshi, Director, National Gallery of Modern Arts, Mumbai. — Member
12. Ms. Laila Tyabji, 45-B, Shahpur Jat, Near Asian Village, New Delhi-110049 — Member
13. Joint Secretary, Department of Culture dealing with the matters relating to the Society. — Ex-Officio Member
14. Joint Secretary & Financial Adviser Department of Culture. — Ex-Officio Member
15. Secretary, Department of Education Govt. of India. — Ex-Officio Member
16. Secretary, Department of Expenditure. — Ex-Officio Member
17. Vice-Chairman, University Grants Commission — Ex-Officio Member
18. Director General, Archaeological Survey of India — Ex-Officio Member
19. Director, Anthropological Survey of India — Ex-Officio Member
20. Director General, National Archives of India — Ex-Officio Member
21. Director, National Gallery of Modern Art, Mumbai. — Ex-Officio Member
22. Director, National Research Laboratory for Conservation of Culture Property, Lucknow. — Ex-Officio Member
23. Prof. A. K, Das, (Prof. History of Museology), National Museum Institute of History of Art, Conservation & Museology, New Delhi. — Member
24. Dr. I. K. Bhatnagar, Dean (Prof. Conservation & Museology) National Museum Institute of History of Art, Conservation & Museology, New Delhi. — Member
25. Registrar, National Museum Institute of History of Art, Conservation & Museology, New Delhi. — Non-Member Secretar

ORDER

Ordered that a copy of the Resolution be communicated to all the offices, Sections of the Department of Culture.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

KASTURI GUPTA MENON
Joint Secretary

MINISTRY OF POWER

New Delhi, the 23rd March 1999

No. 6/2/97- Trans. In parial modification of Ministry of Power's Resolution of even number issued on 4th August, 1997, the following amendments are made :

(a) Chairman, DVB is included as a Member of NREB and will be eligible for appointment as Chairman, NREB by rotation.

(b) CMD, Haryana Vidyut Prasaran Nigam is appointed as Member, NREB in place of Chairman, Haryana State Electricity Board.

The other constituent members will remain the same.

ORDER

Ordered that the above Resolution be communicated to the State Governments of Punjab, Rajasthan, Uttar Pradesh, Haryana, Himachal Pradesh, Delhi, UT Admn. of Chandigarh, the Bhakra Management Board, the Power Grid Corpn. Ltd., North Region, the Northern Region NTPC, NHPC Central Electricity Authority, all Ministries of Govt. of India, the Prime Minister's Office, the Secretary to the President, the Planning Commission and the Comptroller and Auditor General of India.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

ANIL RAZDAN
Joint Secretary

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 23rd March 1999

RESOLUTION

No. E-11016/8/96-R.B.N. :—In supersession of the Ministry of Labour Resolution No. E-11016/24 93R.B. N. dated the 10-12-93, amended from time to time, the Government of India have decided to reconstitute the Hindi Salahkar samiti of the Ministry of Labour as under :

COMPOSITION

Union Minister of Labour	Chairman

OFFICIAL MEMBERS

1. Secretary, Ministry of Labour	Member
2. Additional Secretary, Ministry of Labour.	
3. Secretary, Department of Official Language and Hindi Adviser to the Government of India.	
4. Joint Secretary, Department of Official Language.	Member
5. Director General (Labour Welfare) Ministry of Labour.	Member
6. Director General, Employment & Training Ministry of Labour.	Member
7. Chief Labour Commissioner (Central) Ministry of Labour.	Member
8. Director General, Dte. Genl. Factory Advice Service and Labour Institute, Mumbai	Member
9, Director General, Employees State Insurance Corporation, New Delhi	Member
10. Director General, Mines Safety, Dhanbad	Member
11, Central Provident Fund Commissioner	Member
12. Director General, Labour Bureau, Simla	Member
13, Director, Central Board of Workers Education Nagpur	Member
14. Labour and Employment Adviser/ Joint Secretary Ministry of Labour	Member

NON-OFFICIAL MEMBERS

15. Shri Anant Kumar Hegde Member, Lok Sabha	Member Nominated by the Ministry.
16. Smt. Omwati Member, Lok Sabha	Member of Parliamentary Affairs
17. Shri Hefai Member, Rajya Sabha	Member
18. Shri Dara Singh Chauhan Member Rajya Sabha	Member

19.	Shri Prafulla Patel Member, Lok Sabha	Member	Nominated by the Committee of Parliament on official Language
20.	Shri Somjibhai Damor Member, Lok Sabha		
21.	Shri Ramesh Gupta Chatak'	Member	Nominated by the Ministry of Labour
22.	Shri Nand Kishore Sharma	Member	
23.	Shri Rasa Singh Rawat	Member	
24.	Shri Shailendra Parashar	Member	
25.	Dr. Sohanpal Sumanakashar	Member	Representative of Bhartiya Dalit Sahitiya Academy
26.	Shri Krishna Kumar	Member	Representative of Kendriya Sachivalaya Hindi Parishad
27.	Dr. V. Krishna, Hyderabad	Member	Nominated by the Department of Official Language
28.	Dr. M. Sheshan,	Member	
29.	Dr. N. Chandera-shekharan Nair, Thiruananthapuram	Member	

2. The functions of the Samiti will be to advise the Ministry of Labour and its attached and subordinate offices on matters relating to the progressive use of Hindi for official purposes.

3. The term of the Samiti will be three years from the date of its constitution. Members of Parliament, who are also members of the Samiti, shall cease to be members of the Samiti on disolution of the House or on expiry of their terms or on otherwise ceasing to be members of the House.

4. The Headquarters of the Samiti shall be at New Delhi.

5. The Non-Official members will be paid travelling and daily allowance for attending the meeting of the samiti at the rates fixed by the Government of India from time to time

ORDER

Ordered that a copy of this Resolution be communicated to all State Government and Union Territory Administrations, Prime Minister's Secretariat, Cabinet Secretariat, Ministry of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Raiya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat, Controller and Auditor General of India Accountant General, Central Revenues and all Ministries and Departments of the Government of India and all offices of the Ministry of Labour Including Autonomous and Semi-autonomous Bodies

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India for General information.

R. K. SAINI
Joint Secretary

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1999
Printed by the Manager, Govt. of India Press, Faridabad and Published by the Controller of Publications, Delhi, 1999